छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-आषाढ़ संवत् 2072
जुलाई 2015

ओ३म्

अंक 120, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

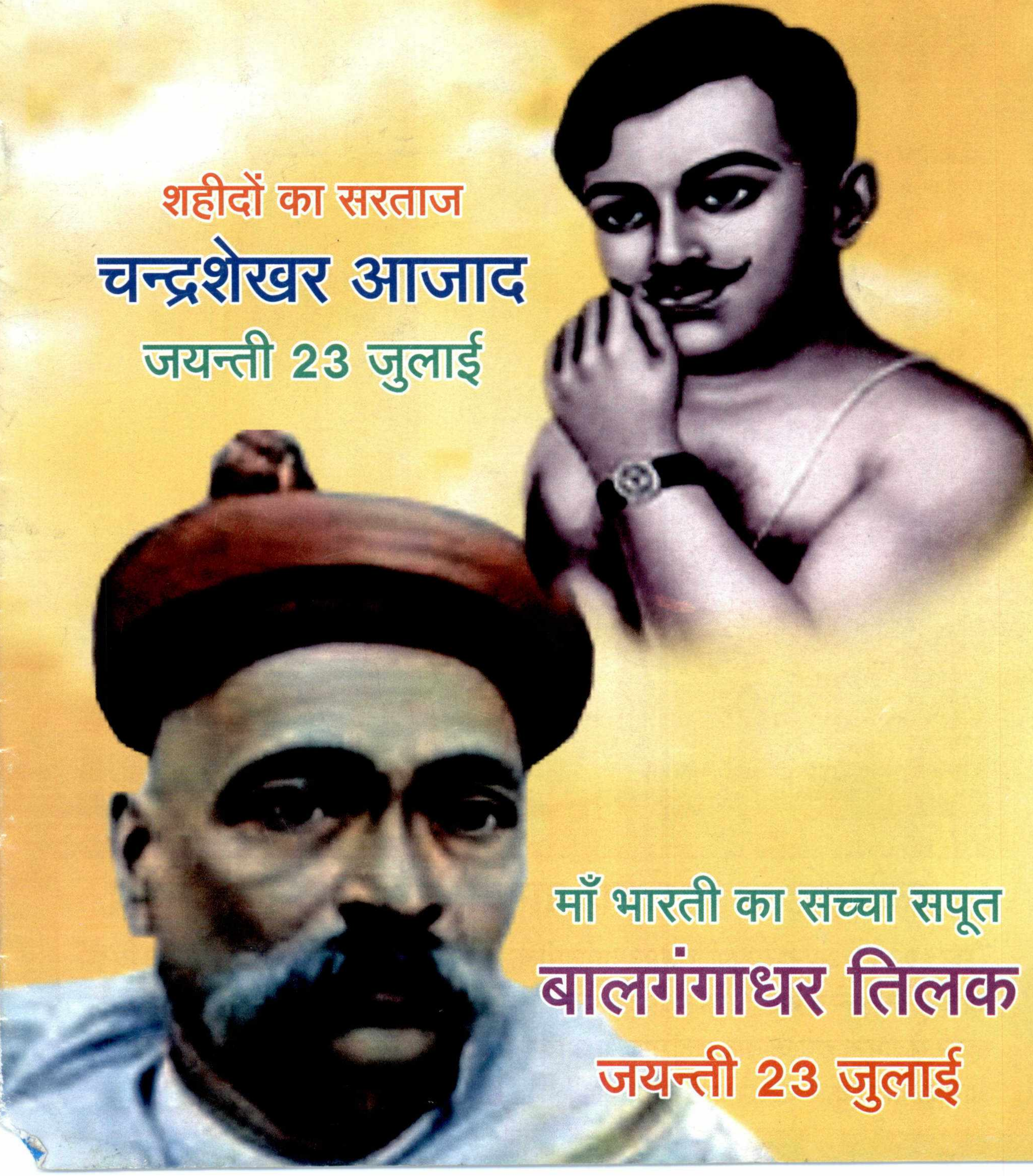

शहीदों का सरताज
चन्द्रशेखर आजाद
जयन्ती 23 जुलाई

माँ भारती का सच्चा सपूत
बालगंगाधर तिलक
जयन्ती 23 जुलाई

पुण्य स्मरण

आविर्भाव
1883

तिरोभार्व
1926

छत्तीसगढ़ के भामाशाह दानवीर तुलाराम जी परगनिहा

"सन् 1926 में अपनी सम्पूर्ण विशाल जमींदारी के 11 ग्राम आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ को दान देने वाले छत्तीसगढ़ के सर्वप्रथम ग्रेजुएट, भिंभौरी निवासी, ब्रिटिश शासन में तहसीलदार रहकर सेवामुक्त होने के बाद छत्तीसगढ़ में आर्य समाज को मुख्य आधार देने, वेद प्रचारार्थ और आर्य कन्या गुरुकुल चलाने वाले व्यक्ति थे।"

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् – २०७२
सृष्टि संवत् – १,९६,०८,५३,११६
दयानन्दाब्द – १९१

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
वरि.प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८)२३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/

वर्ष – ११, अंक १ ओ३म् मास/सन् – जुलाई – २०१५

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं ,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम् ,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय – सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : खड्ग-धार जैसी तीव्र बुद्धि	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय :आखिर क्या है, राष्ट्रोत्थान के उपाय ?	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	ईश्वर के वैदिक नाम विज्ञानस्वरुप है.	ओमप्रकाश आर्य	०८
४.	आस्तिक रहित होने पर ही प्रभु की प्राप्ति होगी.	कन्हैयालाल आर्य	११
५.	किताबों में कुलबुलाते कलह के कीड़े	श्री रमेश दवे	१३
६.	अधोगमन का सिद्धान्त	अजय शर्मा	१४
७.	महापुरुषों के प्रेरक एवं श्रद्धास्पद– महर्षि दयानन्द	मनमोहन कुमार आर्य	१६
८.	पूर्ण ब्रह्मचारी कौन होता है	खुशहालचन्द्र आर्य	१९
९.	वर्षा ऋतुचर्या	डॉ. जगदीश पंचोली	२१
१०.	अग्निहोत्र : एक देव यज्ञ	कृपालसिंह वर्मा	२२
११.	कविता : वेदों का पथ हम अपनायें	विनोद बिहारी सक्सेना	२३
१२.	अमर शहीद– चन्द्रशेखर आजाद	लोचन शास्त्री	२४
१३.	राष्ट्र धर्म का दीवना– बालगंगाधर तिलक	आचार्य भगवानदेवल चैतन्य	२५
१४.	दानवीर तुलाराम परगनिहा के प्राकट्य दिवस पर पुण्य स्मरण	दीनानाथ वर्मा	२७
१५.	होम्योपैथिक से खाद्य विषाक्ता का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३०
१६.	समाचार दर्पण		३१

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

वेद वेदामृत

खड्ग-धार जैसी तीव्र बुद्धि

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

इन्द्र मृळ मह्यं जीवातुमिच्छ, चोदय धियमयसो न धाराम्।
यत्किंचाहं त्वायुरिदं वदामि, तज्जुषस्व कृधि मा देववन्तम्॥ ऋग्. ६.४७.१०

ऋषिः **गर्गः भारद्वाजः**। देवता **इन्द्रः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(इन्द्र)** हे परमात्मन्! **(मृड)** सुखी कर, **(मह्यं)** मेरे लिए **(जीवातुं)** जीवन को **(इच्छ)** चाह, **(धियं)** बुद्धि को **(अयसः)** लोहमय (खड्ग आदि) की **(धारां न)** धार के समान **(चोदय)** प्रेरित कर। **(यत् किंच)** जो कुछ भी **(इदं)** यह **(त्वायुः)** मेरी कामना वाला, तेरी प्रेमी **(अहं)** मैं, **(वदामि)** कह रहा हूँ **(तत्)** उसे **(जुषस्व)** स्वीकार कर, पूर्ण कर। **(मा)** मुझे **(देववन्तं)** प्रशस्त दिव्य गुणों वाला और प्रशस्त देवों वाला **(कृषि)** कर।

● **हे** इन्द्र! राजाधिराज परमात्मन्! हे दुःखहर्ता और सुखदाता! इस दुःख बहुत जगत् में तुम्हीं हमें सुखी कर सकते हो। हम दुःखों से अकुलाकर तुम्हारे द्वार पर आये हैं और तुमसे सुख की भिक्षा मांग रहे हैं। हमें आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक, सर्वविध सुखों से समन्वित करो। जीवन में ही सच्चा सुख है, अतः तुम हमें जीवन से अनुप्राणित करो। जीवन क्या है? प्राणवत्ता, जागरुकता, स्फूर्ति, कर्मण्यता, प्रगतिशीलता का ही नाम जीवन है। वह तुम हमें प्रदान करो। जिनमें जीवन नहीं होता, वे लोग जड़ पत्थर के समान निष्क्रिय और उदासीन होकर पड़े रहते हैं। हम वैसा नहीं बनना चाहते, क्योंकि सुख का सूत्र उसमें नहीं है। हे बुद्धि के देव! हमारी यह भी कामना है कि तुम हमारी बुद्धि को खड्ग आदि की धार के समान प्रेरित करो। जैसे तीव्र खड्ग-धार रिपु दल को काटकर शान्ति स्थापित करती है, वैसे ही हमारी तीक्ष्ण बुद्धि प्रतिपक्षी के सब कुतर्कों को काटकर सत्य की स्थापना करने में प्रवीण हो। हम अपने बुद्धिबल से सब पाखण्डों का खण्डन कर विश्व में पाखण्ड-खण्डिनी पताका लहरा सकें। साथ ही हमारी बुद्धि को ऐसी प्रखर कर दो कि गहन से गहन शास्त्रों के मर्म को वह हृदयंगम करा सके और जटिल से जटिल गुत्थियों को सुलझा सकें।

हे प्रभु! मुझे तो तुम्हारी लौ लगी हुई है, मैं तो तुम्हारा प्रेमी बन गया हूँ। तुम्हारा आराधक मैं जो कुछ तुमसे निवेदन कर रहा हूँ, उसे तुम पूर्ण करो। मैं देववान् बनना चाहता हूँ। देववान् वह कहलाता है, जिसमें प्रशस्त दिव्य गुणों का वास होता है, जो धर्मनिष्ठ, विद्वान्, न्यायप्रिय, समाजसेवी, परोपकार-परायण, सदाचारी और सत्कर्मों का प्रेमी होता है। इसके अतिरिक्त उसे भी देववान् कहते हैं, जिसे प्रशस्त माता-पिता, गुरुजन आदि के देवों को प्राप्त करने का सौभाग्य मिलता है। वह भी देववान् कहाता है, जिसके मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रिय आदि के देव प्रशस्त एवं नियन्त्रण में रहने वाला होते हैं। तुम मुझे ऐसा ही देववान् बना दो, तभी मैं सच्चा सुख पा सकूंगा।

संस्कृतार्थ :- १. त्वां कामयते इति त्वायुः। युष्मद् क्यच् उ। २. प्रशंसार्थ में मतुप् प्रत्यय।

सम्पादकीय

आखिर क्या है राष्ट्रोत्थान के उपाय

भारत हमारा राष्ट्र है । हम इसकी गौरवशाली सन्तान हैं । हमारा चरित्र एवं आचरण, इसके गौरव तथा मर्यादा के अनुसार हो तथा हमारी शिक्षा-दीक्षा और कार्य-कलाप, इसके सम्मान को बढ़ाने वाले हों । यह है वह प्रेरणा और महत्वाकांक्षा जिसे मूर्त रुप देने के लिए स्वदेश प्रेम, स्वाभिमान, सहष्णुता, सेवा-भाव, स्वानुशासन, सद्व्यवहार, संगठन और स्वाध्याय आदि गुणों को शिक्षकों द्वारा अपने शिक्षार्थियों में उत्पन्न करने का प्रयास करना नितान्त आवश्यक है । शिक्षणालय के आचार्य बन्धु, शिक्षणार्थियों के मन में भारत की महानता, भव्यता एवं पावनता के सम्बन्ध में, गौरव के भाव भरें क्योंकि कर्मठ और आदर्शवादी आचार्यों के सदाचरण का विद्यार्थियों पर विशेष प्रभाव होता है । शिक्षकों के आदर्श नेतृत्व में ही, आज के विद्यार्थी कल के आदर्श राष्ट्र-निर्माता बन सकने में समर्थ हैं ।

हम उस देश में उत्पन्न हुए हैं जिस देश में योगीराज श्रीकृष्ण ने और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया, महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की, महर्षि वेदव्यास ने महाभारत की रचना की, युधिष्ठिर जैसे धर्मात्मा, ऋषि दधीचि जैसे दानी, महाराजा हरिश्चन्द्र जैसे सत्यवादी लोकमान्य तिलक जैसे कर्मयोगी, महामना मालवीय जैसे निष्ठावान् महाराणा प्रताप जैसे प्रणवीर, छत्रपति शिवाजी जैसे और गुरु गोविन्द जैसे कर्मवीर हुए । सीता, सावित्री और अनुसुईया जैसे पतिव्रता नारियाँ हुई, गोस्वामी तुलसीदास और सूरदास जैसे भक्त हुए ।

हमारे देश गौरवशाली है, वैभवशाली है । गंगा और गायत्री का देश है । ऋषि-मुनियों की घोर तपस्या, सन्तों की वाणी और यहां की सभ्यता और संस्कृति, हम सब की अमूल्य निधि है । शिक्षक-बन्धुओं का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि वे अपने छात्र-बालको के हृदयों में, शिक्षा के माध्यम से, भारत का यह भव्य और पावन चित्र अंकित करें, जिसके परिणाम स्वरुप छात्र-बालक कोई ऐसा काम न करें, जो हमारे देश की संस्कृति, प्रतिष्ठा और मर्यादा के अनुकूल न हो।

शास्त्र कहते है - ***"ऋतुमयोऽमं पुरुषः, स यत्ऋतुर्भवति तत्कर्म कुरुते, यत्कर्म कुरुते तबभिसम्पद्यते"*** *अर्थात् पुरुष क्रतुमय है, वह जैसा संकल्प करता है, वैसा ही आचरण करता है और जैसा आचरण करता है, फिर वैसा ही बन जाता है । कर्म का आधार विचार ही है । अतः स्पष्ट है कि अच्छे आचरण एवं सच्चारित्र्य के लिये अच्छे विचारों को मन में लाना आवश्यक है । अच्छे शास्त्रों का अभ्यास, श्रेष्ठ पुरुषों का सङ्ग करने और पवित्र वातावरण में रहने से अच्छे और शुभ विचार बनते हैं, बुरे कर्म और बुरे विचार छूट जाते हैं । अतः श्रेयास्कामी को सर्वदा-सर्वत्र सच्चिन्तन में ही लगे रहना है और बालकों को भी आदर्श राष्ट्र निर्माण के लिये सच्चिन्तन में लगाना है ।*

वर्तमान युग में समस्त विश्व चारित्र्य दौर्बल्यव्याधि से पीड़ित है । भारत वर्ष भी, इस रोग के जबड़े के आभ्यन्तर में उत्तरोत्तर ग्रस्त होता जा रहा है । आए दिन समाचार-पत्रों के पन्ने घटित वीभत्स दुर्घटनाओं के समाचारों से ओत-प्रोत रहते हैं । आज के भारतीय जीवन में विचारों और भावों की उच्चता की चर्चा मात्र होती है । इस उच्च कोटि के भावराज्य का चिन्तन करते हैं, किन्तु चारित्रिक धरातल के निम्न रहने के कारण यह सब मात्र कल्पना की उड़ान बन कर रह जाता है । इसलिये अच्छे राष्ट्र के निर्माण के लिये आवश्यक है कि छात्र-बालकों का चरित्र उज्वल हो । उनके जीवन में दैवी सम्पत्ति के लक्षणों का उद्भव और विकास हो । अतः स्थितप्रज्ञ, गुणातीत आदर्श महापुरुषों के लक्षण पढ़ें । रामचरित्र मानस में महापुरुषों के जो लक्षण बताए हैं उन्हें अपना आदर्श बना कर अपने और अपने छात्र-बालकों के चरित्र को

परिष्कृत करना चाहिये, ताकि हमारे राष्ट्र का भविष्य सर्वतोमुखी प्रतिभा से आलोकित हो उठे ।शास्त्रों में शिक्षक और शिक्षार्थियों के विचारों को संभालने के लिये विशेष ध्यान दिया गया है । छात्र-बालकों के कोमल और निर्मल अन्तःकरणों में, पहिले से ही जो संस्कार अंकित हो जाते हैं, वे ही उनका चरित्र-निर्माण करते हैं। इसलिये छात्रों को पहिले से ही श्रेष्ठ पुरुषों के सङ्ग में तथा सत्शास्त्रों के अभ्यास में लगाना लाभदायक है । जैसे लोगों का संग होता है और जैसे लोगों से व्यवहार होता है और जैसा होने की उत्कृष्ट वांछा होती है मानव वैसा ही हो जाता है । सद्विचारों के प्रसार से शिक्षणालय श्रेष्ठ चरित्र वाले छात्रों का निर्माण कर सकते हैं । शिक्षार्थियों के उज्जवल चरित्र से विश्व का अभ्युदय होगा। वृक्ष-वृक्ष से जंगल बनता है । यदि एक वृक्ष विकसित, पल्लवित, पुष्पित और फलित होता है तो वह वनश्री की वृद्धि ही करता है । इसी प्रकार समाज का एक-एक छात्र-बालक चरित्रवान् होकर, पूरे समाज को चरित्रवान् बनाने में योग दे सकता है । यदि उससे प्रेरणा प्राप्त करके दूसरों ने भी अनुसरण करना प्रारम्भ किया तो वह पूरे समाज की काया पलट कर सकता है । लौकिक अभ्युदय और पारमार्थिक कल्याण के लिये, धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत सदाचार ही प्राथमिक आवश्यकता है । चरित्र-निर्माण का यही प्रथम सोपान है ।

व्यक्तियों से समाज तथा समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है । उन्नतिशील समाज तथा राष्ट्र के लिये व्यक्तियों का चरित्रशील होना आवश्यक है । शास्त्रानुकूल कर्म या व्यवहार ही चरित्र है । प्राचीन भारत में व्यक्ति का सम्मान था, धन-वैभव का नहीं, इसीलिये भारतवर्ष में श्रीराम और सीता का सदाचार त्रिकालाबाधित सत्य की भान्ति मान्य है- स्वर्णमयी लंका के स्वामी रावण का नहीं । अतएव राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने के लिये शिक्षणालयों के शिक्षकों को प्राचीन शिक्षा-पद्धति का अनुसरण करते हुए अपने शिक्षार्थियों की आदर्श, शुचिशील और चरित्रवान् बनाने का भरसक प्रयत्न करना है, ताकि आज के शिक्षार्थी महापुरुष बन कर राष्ट्र के गौरव, सम्मान, संस्कृति और देश-धर्म-मर्यादा की रक्षा करते हुए आदर्श आध्यात्मिक राष्ट्र-निर्माण में सफलता प्राप्त कर सके ।

हमारा राष्ट्र समग्र विश्व के लिये राष्ट्रीय चरित्र का सजग प्रहरी के रुप में था । आज असहिष्णुता, क्षेत्रीयता, अखण्ड राष्ट्रीयता की भावना का अभाव, तुच्छ भाषागत विवाद आदि दुर्गुण हमारे अतीत के सभी उज्जवल चरित्र को धूमिल और विस्मृत कर चुके हैं । दुःस्थिति आकण्ठ निमग्न हो चुकी है । देश, राष्ट्र, समाज और व्यक्ति प्रतिक्षण अधोगामी होते जा रहे है । नदी की धारा और मानव की प्रवृत्ति अधोगामिनी होती है । उन्हें निम्नगा होने से रोकना और ऊर्ध्वगामिनी बनाना अत्यन्त ही कठोर कार्य है, जो निष्ठा, तत्परता तथा दृढ़ संकल्प के बिना सम्भव नहीं है । अतः आवश्यक है कि राष्ट्रीय चरित्र निर्माण हेतु मानवीय प्रवृत्ति को ऊर्ध्वगामिनी बनाया जाये और निष्ठा, लगन तथा तत्परता से एतदर्थ राष्ट्र-व्यापिनी योजना चला कर, सैद्धान्तिक तथ्यों को शिक्षार्थियों से हृदयों में, शिक्षा के माध्यम द्वारा, अंकित करने का भगीरथ प्रयत्न किया जाए । इसी में राष्ट्रीय चरित्र की शाश्वत उपयोगिता निर्विवाद है ।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में, प्रगति का कार्य तभी सम्भव है, जब व्यक्ति, समाज और राष्ट्र परिस्थितियों की चुनौतियों को स्वीकार कर, संघर्ष करने के लिये तत्पर हों । यह भी एक तप है । उपनिषदों में कहा गया है कि ब्रह्म भी अपना विस्तार तप से ही करने में समर्थ होता है । यदि हम आज मानवीय हृदय की संकीर्णता को छोड़कर तप की शक्ति पहचान लें तो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र - इन सब के चरित्र को एक नया आयाम प्राप्त हो सकता है - ऐसा आयाम, जिस में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र अणुविराट् के स्पर्श से आभूषित हो सके । धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों से संबंधित व्यक्तियों और शिक्षकों को शिक्षार्थियों में तप की इस शक्ति को सैद्धान्तिक रुप में समझाना है और क्रियात्मक रुप में परिणत करने के लिये प्रयास करना है और चरित्र-निर्माण के उस जीवन दर्शन को जो सत्य को सर्वोपरि मान कर चलता है, शिक्षार्थियों को हृदयङ्गम कराना है । आध्यात्मिक जीवन दृष्टि ही बालक-छात्रों के स्वच्छ मन को दिव्य आलोक से अलंकृत करने में सक्षम है । शिक्षार्थियों के चरित्र-गठन की साधना ही उनके जीवन-गठन की आधारशिला है । जब राष्ट्र

चरित्रवान् महापुरुषों के नेतृत्व द्वारा परिचालित होता है, तब राष्ट्रवासी अल्प त्याग से भी विपुल समृद्धि का अर्जन करने में समर्थ होते हैं। मनु महाराज द्वारा उपदिष्ट-अहिंसा, अस्तेय, सत्य, शौच और इन्द्रियनिग्रह- इन पांच कर्मों का शिक्षकों में होना अनिवार्य है। इन्हीं पांच कर्मों पर मानव-संस्कृति की गगनचुम्बी अट्टलिका स्थिर की जा सकती है। शिक्षक-बन्धुओं को इन पांच कर्मों के अनुसार जीवन-यापन करने के साथ-साथ अपने शिक्षार्थियों में भी इन्हीं आदर्श कर्मों की प्रेरणा देनी चाहिए ताकि वे अपने राष्ट्र को उच्च बनाने में सक्षम हो सकें।

राष्ट्र को प्रगति पथ पर अग्रसर करने के लिये शिक्षार्थियों में सदाचार, चरित्र और शील की भावनाएं आवश्यक ही नहीं प्रत्युत अनिवार्य भी है। हमारे राष्ट्र में प्राचीन काल से ही सदाचार की एक सात्विक सरिता सतत प्रवाहित होती रही है और अजल स्रोत प्रवाहमान रहा है। सदाचार के इसी अक्षय स्रोत से हम आज के युद्ध-जर्जर और विषाक्त विश्व के लिये शीतल जल लेकर कल्याण का कार्यक्षेत्र रिक्त कर सकते हैं, मानवता का पथ-प्रशस्त कर सकेत हैं और प्रेम का पावन प्रकाश विकीर्ण कर सकते हैं। सदाचार के सोपान पर आरुढ़ होकर ही हमारे भारतवर्ष के भावी कर्णधार शिक्षार्थी स्वर्गीय गौरव और आनन्द की प्राप्ति कर सकते हैं औड़ चारित्र्य की वाटिका में ही जीवन-पुष्प की सर्वश्रेष्ठ सुगन्ध फैला सकते हैं। अमृतत्व की प्राप्ति ही मानव-जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। सदाचार, शील और चारित्र्य की पावन त्रिवेणी-धारा में गोता लगाए बिना यह अमृत्व प्रापत नहीं हो सकता है।

आज मानव के मन में जो अशान्ति आ रही है, वह इसलिये कि हमारे जीवन से सदाचार का स्रोत शुष्क हो चुका है और शील की सरिता सूख गई है। आज हमारे ज्ञान-विज्ञान सभी व्यर्थ सिद्ध होंगे यदि भारत के शिक्षणालयों के शिक्षार्थी सदाचारी, शीलवान् और चरित्रवान् नहीं बनते हैं। इसलिये हमारे शिक्षकों का यह परम कर्त्तव्य बन जाता है कि वे अपने छात्र-बालकों में शील, सदाचार, धर्म, नीति और चारित्र्य की भावनाएं प्रतिष्ठित करें और उनके जीवन को पवित्र बनाएँ। शिक्षार्थियों के जीवन के पवित्र होने पर समाज सात्विक गुणायुक्त हो सकता है और विश्व विमल बन सकता है। सदाचार और शील के अपनाने से ही हमारे भावी राष्ट्र-निर्माता शिक्षार्थी अपना, राष्ट्र का और विश्व का कल्याण कर सकते हैं।

भारत की सदाचार पद्धति बहुत ही विशिष्ट और सर्वजन स्पृहणीय है। सदाचार पद्धति के आविष्कारक ऋषि-महर्षियों ने स्वयं भी सदाचार पद्धति के अनुरुप ही अपना समस्त जीवन व्यतीत किया था और उसको अपनी स्मृतियों और पुराणों में स्थान देकर मानव-जाति का महान् उपकार किया है। आज भी, जब हम अपने पूर्वज ऋषि-महर्षि प्रणीत सदाचारपूर्ण धर्मग्रन्थों को देखते हैं तो उनमें सदाचार का बहुत ही आदर्शपूर्ण वर्णन मिलता है जिसके अनुसार यदि हमारे शिक्षक जीवन-यापन करें और अपने छात्रों को भी ऐसा ही जीवन-यापन करने की प्रेरणा दें तो हमारा भारत वर्ष सर्वशक्ति-सम्पन्न आदर्श आध्यात्मिक राष्ट्र बन सकता है। आध्यात्मिक विजय ही स्थायी होती है। उसी के आधार पर किये गये कार्य स्थायी महत्व रखते हैं। उसी दैवी तत्व के प्रकाश से महान् कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शिक्षार्थी वर्ग को दैवी तत्व के साक्षात्कार और उसके द्वारा सम्पन्न महान् कार्यों की सिद्धि के मर्म को शिक्षक-बन्धुओं द्वारा समझाने की आवश्यकता है। प्रत्येक शिक्षणालय, शिक्षक और शिक्षार्थी का अपने देश के प्रति महान् उत्तरदायित्व होता है। हमारा राष्ट्र भारतवर्ष धर्म और अध्यात्म-विद्या का स्रोत है। हमारी इस पवित्र मातृभूमि का मेरुदण्ड मूलभित्ति या जीवन-केन्द्र एकमात्र धर्म ही है। इसलिये हमें इस धर्मप्राण राष्ट्र में धर्म की नीति के अनुसार चलना है। हमारा नैतिक आचरण उच्च व महान् हो। हमें अपने प्राचीन गौरव को सम्मुख रख कर, हिंसा-प्रतिहिंसा, द्वेष, अत्याचार और भ्रष्टाचार प्रभृत्ति, अनैतिक आचारों से बचना है। अपने राष्ट्रीय चरित्र के उत्कर्ष के लिये इच्छुक, लालायित और प्रयासशील होना है। तभी अपूर्व महिँमा से मण्डित भावी भारत राष्ट्र का पुनर्जागरण होगा।

- आचार्य कर्मवीर

गवेषणात्मक

ईश्वर के वैदिक नाम विज्ञानस्वरूप हैं.

- ओमप्रकाश आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के सौ वैदिक नामों की व्याख्या की है। यदि उन नामों की वैज्ञानिकता पर विचार किए जाए तो उसके सारे नाम विज्ञान की कसौटी पर खरे सिद्ध होंगे।

प्रथम 'विराट्' शब्द को लें। इस शब्द को महर्षि ने अनेक प्रकार से जगत् को प्रकाशित करने वाला लिखा है। हम सभी जानते हैं कि आकाशस्थ लोक लोकान्तरों की संख्या अनगिनत है। उनकी गणना नहीं की जा सकती। सौरमंडल, आकाशगंगा, पुच्छल तारे, आकाशगंगाओं की संख्या भी अनगिनत, उसमें असंख्य तारे- इन सब को परमात्मा प्रकाशित करता है। कोई पूछे, सूर्य स्वयं प्रकाशवान है - उसमें प्रकाश कहां से आता है ? तो इसका उत्तर होगा- उसमें प्रकाश का कारण ईश्वर है। क्या इस बात को कोई झुठला सकता है कि सूर्य में प्रकाश नहीं है ? यह वैज्ञानिक सत्य है। सूर्य, अजस्र ऊर्जा का स्रोत है। वह ऊर्जा अक्षुण्ण है। ऐसे समस्त लोगों में एक ही परमात्मा का प्रकाश है इसी से उसका नाम 'विराट्' है जो 'वि' उपसर्ग पूर्वक 'राजृ' धातु से बनी है। राजृ धातु दीप्ति अर्थात् प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है। संभवतः आने वाले समय में सारे यंत्र सौर ऊर्जा से संचालित हों। ऊर्जा क्या है ? प्रकाश ही तो है। प्रकाश क्या है ? परमात्मा का ही तो तेज है।

'अग्नि' भी परमात्मा का नाम है। स्वामी जी लिखते हैं- स्वप्रकाश होने से परमेश्वर का नाम 'अग्नि' है। 'अग्नि' नाम के पीछे विज्ञान 'अग्नि' भी ऊर्जा है। इसका उच्चारण करते ही ऊष्मा आभास होने लगता है। एक लकड़ी को दूसरी लकड़ी से रगड़ने पर अग्नि पैदा हो जाती है। पत्थर को टकराने से अग्नि पैदा हो जाती है। समुद्र में बड़वानल क्या है ? अग्नि ही तो है। इन सब में प्रकाश है। इस प्रकाश का कारण अणु-अणु में व्याप्त परमात्मा ही है जिसकी प्रकाश के रूप में अनुभव कर सकते है। अतएव परमातमा का अग्नि नाम सर्वथा सार्थक सिद्ध होता है। 'अग्नि'आज का विज्ञान तो पूर्णतः अग्नि पर ही अवलंबित है। बिना विद्युत (अग्नि) के सारे विज्ञान के साधन पंगु सिद्ध हो जायेंगे अग्नि शब्द को स्वामी जी ने इणू गत्यर्थक धातु से निष्पन्न बताया है। इसका तात्पर्य है अग्नि गतिमय है। गति किस प्रकार ? जब तक हमारे शरीर में अग्नि है तब तक शरीर चलेगा। इसके समाप्त होते ही जीवनलीला समाप्त। जब तक सूर्य में अग्नि है तब तक वह प्रतिदिन उदय और अस्त होगा। उसके समाप्त होते ही प्रलय की स्थिति होगी। जब तक बिजली रहती है यंत्र चलते हैं। बिजली चली जाने से सारे यंत्र ठप्प हो जाते हैं। इस प्रखार अग्नि गति प्रदान करती है। यही गति चेतन के लिए जीवन है और सृष्टि के लिये संचालिका।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं - परमात्मा का एक नाम 'विश्व' है। यह 'विश्' धातु से प्रवेश अर्थ में प्रयुक्त होता है। सारा भौतिक जगत् परमात्मा में प्रविष्ट हो रहा है। इस नाम के पीछे क्या विज्ञान है ? विज्ञान नहीं बहुत बड़ा विज्ञान छिपा है। यदि रात में आकाश में दृष्टि डाली जाए तो पता चलेगा कि दिखनेवाला समस्त पिंड मनुष्य की चिंतनशक्ति से परे हैं। उनकी कोई निश्चित सीमा नहीं है। इस असीमित आकाश में अनन्त लोक-लोकान्तर है। उनकी सही-सही गणना व ज्ञान प्राप्त करना असंभव है। ये सारे लोक एक नियम में बद्ध होकर गति कर रहे है। किसी भी स्थिति में उसमें निमय का उलंघन नहीं होता है। परमात्मा भी अनन्त है। सृष्टि भी अनन्त है। सारे भूमंडल परमात्मा में प्रविष्ट है। उसी में प्रविष्ट होकर गति कर रहे हैं। परमात्मा से कोई भी स्थान खाली नहीं है। वह सर्वव्यापक है। विश्व व्याप्य है। परमात्मा में सब प्रविष्ट हो रहे हैं। इसी प्रवेश के कारण उसका एक नाम 'विश्व' है। आज के वैज्ञानिक भी इस तथ्य को स्वीकार कर रहे हैं कि सृष्टि अनंत है। उसका पता पाना संभव नहीं है। 'विश्व' नाम परमात्मा की व्यापकता पर प्रकाश डालता है।

परमात्मा का नाम 'हिरण्यगर्भ' भी है। स्वामी जी इस शब्द का अर्थ सूर्यादि तेजवाले पदार्थों का गर्भ और उत्पत्ति

करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि जिसने तेजवाले स्वतः परतः प्रकाशित लोक हैं उन सबकी उत्पत्ति एक गर्भ से होती है। यह गर्भ क्या है? आकाशस्य ग्रह, उपग्रह, तारे जो एक नियम में चालित है उनकी उत्पत्ति गर्भ से हुई है। आधुनिक वैज्ञानिक ने इस बात को सिद्ध किया है कि प्रारंभ में सृष्टि उत्पत्ति के समय सूर्य, चंद्र, पृथ्वी आदि एक महापिंड से समाहित थे। एक महा विस्फोट हुआ। उस महाविस्फोट के अनन्तर पृथ्वी, सूर्य, चंद्र आदि की निष्पत्ति हुई है। इस महान् पिंड का नाम वैदिक शब्द 'हिरण्यगर्भ' है। हमारा सौरमंडल उसी विस्फोट का परिणाम है। जिस प्रकार परिवार में अनेक सदस्य रहते हैं उसी प्रकार हिरण्यगर्भ रूपी परिवार से उत्पन्न सदस्य सूर्यादि उसी परमात्मा के आधारस्वरुप हैं। सबका आधार, उत्पत्ति का मूल कारण होने से उसका 'हिरण्यगर्भ' नाम सार्थक और वैज्ञानिक है।

परमात्मा का एक नाम 'वृहस्पति' है। स्वामी जी लिखते हैं कि जो बड़ों से भी बड़ा और बड़े आकाशादि पिंडों का स्वामी है इससे उस परमात्मा का नाम 'वृहस्पति' है। चंद्रमा से बड़ी पृथ्वी है। पृथ्वी से १३ लाख गुना बड़ा सूर्य है। बृहस्पति ग्रह में १३०० प्रविष्टियाँ समा सकती है। सूर्य से भी लाखों गुना बड़े-बड़े सूर्य है। इतने बड़े-बड़े भूखंडों को नियम में बाँधकर उनको कौन चलाता है? सन् १९८० के दशक में एक पुच्छल तारे की पूँछ का टुकड़ा बृहस्पति ग्रह पर गिरा था। उस पर हमारी पृथ्वी के जैसे तीन गड्ढे बन गए थे। इतने बड़े-बड़े भूखंड जिनकी कल्पना नहीं की जा सकती। उन सबका स्वामी है परमात्मा। वह उन सबसे बड़ा है। उससे बड़ा कोई नहीं है। इतना बड़ा परमात्मा मानव की चिंतनशील से परे है। इसी कारण उसका नाम 'वृहस्पति' है। यह नाम भी वैज्ञानिक अर्थ प्रदान करता है।

'ईश्वर' शब्द स्वयं में वैज्ञानिक अर्थ रखता है। अनंत ऐश्वर्यवान् होने के कारण उसका नाम 'ईश्वर' है। ईश्वर का अनंत ऐश्वर्य क्या है? उसका अनंत ऐश्वर्य है - उसका परमधाम, परमधाम, परमगति या मोक्षसुख। मोक्षसुख से बढ़कर अन्य कोई सुख नहीं है। उसी सुख की प्राप्ति मानवजीवन का मुख्य उद्देश्य है। वहाँ पहुँचकर आत्मा परमात्मा के अनंत आनंद का बहुदीर्घ काल तक उपभोग करता है। उसी सुख को प्राप्त करने के लिए आत्मा सदा लालायित रहता है। उसको मोटे रूप में इस प्रकार समझा जा सकता है - वह धनी व्यक्ति है। उसके पास अपार धन संपदा है। महल है। जमीन-जायदाद है। मोटर-कार है। नौकर-चाकर हैं। ये सब सबके सुक के साधन है। यही उसके ऐश्वर्य हैं। वह ऐश्वर्यशाली व्यक्ति कहलाएगा, यद्यपि उसके ये ऐश्वर्य एक निश्चित सीमा में बंधे हुए हैं। परमात्मा का मोक्षसुक सीमा या बंधन से रहित है। आत्मा परमात्मा की अनंत ज्ञानपूर्ण सृष्टि का आनंदपान करता है। यह मोक्षसुख अनंत है। परमात्मा अनंत ऐश्वर्यवाला है। अनंत ऐश्वर्यवान् होने के कारण उसका 'ईश्वर' नाम वैज्ञानिक अर्थ से परिपूर्ण है। उसका दूसरा ऐश्वर्य है - यह अनंत कोटि का ब्रह्माण्ड, यह सौंदर्यशालिनी सृष्टि जो अनंत रहस्यों से भरीहुई है।

प्रकृति में जितना रहस्य है वह सब परमात्मा का ऐश्वर्य ही तो है। प्रातःकाल वायु का एक शीतल झोंका आपके तन-मन को आनंद से विभोर कर देता है। प्रकृति के नजरों को देखकर न जाने कितने भावुकजन मंत्रमुग्ध होकर अपने को कुछ समय के लिये भुला दिए। सृष्टि के रहस्य को जानकर न जाने कितने वैज्ञानिक दाँतों तले अँगुली दबा लिए। ये सारे ऐश्वर्य भौतिक है जो परमात्मा के हैं। इन पर उसी का अधिकार है। इसी से वह ईश्वर कहलाता है।

'सरस्वती' एक ऐसा शब्द है जो लोक में एक देवी विशेष के अर्थ में प्रयुक्त होता है किन्तु यह शब्द भी परमात्मा का एक नाम है जो स्त्रीलिंग में है। स्वामी जी ने इसका अर्थ किया है- जिसको विविध यथावत होवे, इससे उस परमेश्वर की नाम सरस्वती है। अर्थात् शब्द, अर्थ, संबध प्रयोग का ज्ञान। इसको इस रूप में समझें-परमात्मा की सृष्टि पूर्णतया वैज्ञानिक है। मानव का शरीर लें। यह रचना कितनी विचित्र है जिसे देखकर बड़े-बड़े वैज्ञानिक हतप्रभ रह जाते हैं। शरीर की बाह्य रचना तो विचित्र है, ही इसकी आंतरिक रचना और भी विचित्र है। मानव के मस्तिष्क में पूरा ब्रह्माण्ड समाया हुआ है। आँख एक नहीं दो बनाया। काम एक नहीं दो बनाया। हाथ एक नहीं दो बनाया। नथुने एक नहीं दो बनाया। पैर एक नहीं दो बनाया। इनको कैसे उचित स्थान पर स्थिर किया है। ऊपर चमड़ी, अंदर, रक्त-मांस, अस्थि, हृदय, यकृत,

उदर आदि। फिर सपनों की अनोखी दुनियां रचाई। यह सब परमात्मा का विविध विज्ञान ही है। इनका संबंध यथावत् बनकर अपनी विज्ञानवती विद्या का परिचय दिया है। इसी कारण उसका नाम 'सरस्वती' है। यह तो रही शरीर की बात। आप एक परमाणु से लेकर ब्रह्माण्ड तक की रचना में विविध विज्ञान देख सकते हैं। एक छोटे से कण या एक छोटे से पत्ते में भी आपको बहुत बड़ा विज्ञान नजर आएगा। 'सृ' धातु से 'सरस्वती' शब्द निष्पन्न है। यह धातु विविध विज्ञान अर्थ प्रतिदिन करता है। इस नाम का आधार परमात्मा की बनाई विविध वैज्ञानिक सृष्टि है।

'पुरुष' भी परमात्मा का एक नाम है। यह शब्द 'घृ' धातु से बना है। 'घृ' धातु का अर्थ पूर्ण होता है। पूर्ण अर्थात् सब जगत् में विद्यमान होना मौजू रहना। परमात्मा कण-कण में पूर्ण हो रहा है। इसी कारण उसका नाम 'पुरुष' है। यदि एक परमाणु का सूक्ष्म वैधानिक विश्लेषण किया जाए तो पता चलेगा कि एक परमाणु में भी सारे सौरमंडल जैसी स्थितियाँ पाई जाती है। इसी से परमात्मा की शक्ति को कण-कण में होने की बात कही गई है। एक सूक्ष्म अणु से लेकर बड़े-बड़े पिंड में वही शक्ति समाहित है। इसी कारण उसे सर्वव्यापक कहा गया है। अनंत नाम दिया है। पुरुष नाम दिया है। पुरुष नाम परमात्मा के पूर्ण होने का आभास कराता है। हवा दिखलाई नहीं पड़ती किन्तु उसमें भी एक नियम है। आक्सीजन और हाइड्रोजन गैस के मिलने से जल का निर्माण हो जाता है। उक्त गैसे दिखलाई पड़ती हैं क्या ? नहीं। उसमें भी एक नियम है। वह नियामक शक्ति उनमें भी पूर्ण है। अतः 'पुरुष' पूर्णतः वैज्ञानिक अर्थ प्रदान करता है।

इस प्रकार ईश्वर एक-एक नाम कोई न कोई वैज्ञानिक अर्थ अभिव्यक्त करता है जो विज्ञान से संबंधित है। 'ओम्' नाम के बारे में किसी को कोई संदेह नहीं है। योग क्रियाओं में 'ओम्' ध्वनि पर विशेष बल दिया जाता है। ध्यान में 'ओम्' का मानसिक जाप किया जाता है। यह परमात्मा का प्रधान और निज नाम है। सर्वोत्तम नाम है। इसकी ध्वनि से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर सुप्रभाव पड़ता है। यह स्व.यं में एक प्राणायाम है। पूर्णतः वैज्ञानिक नाम है। इसके उच्चारण का प्रथ्यक्ष प्रभाव स्वामी रामदेव जी पूरे विश्व में प्रसारित कर रहे हैं। ध्वनिविस्तारक यंत्र से दिन-रात हरे राम, हरे कृष्ण, हरि हरि चिल्लाने वाले ईश्वर के वैज्ञानिक नाम का अर्थ क्या जानें ? आर्यसमाज के अतिरिक्त ईश्वर के नाम का वैज्ञानिक अर्थ और कौन बताता है ? इन नामों की वैज्ञानिका न समझ पाने के कारण लोगों ने एक-एक नाम से एक-एक भगवान् बना डाले जो विभिन्न मत-मतान्तरों के रूप में जन्म लेकर वैदिक मान्यता को खंडित कर दिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उन्हीं बिगड़े आर्यों को सुधारकर हमारे समक्ष रखा और सत्यार्थ प्रकाश में प्रथम स्थान दिया। लोक कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि ईश्वर के नामों में भी विज्ञान भरा पड़ा है। इसी कारण स्वामी जी ने लिखा है कि ईश्वर का कोई नाम अनर्थक नहीं है। आवश्यकता है चिंतन और मनन करने की।

पता - आर्यसमाज रावतभाटा, वाया-कोटा, राजस्थान

बोध कथा

धर्म का मर्म

एक साधु शिष्यों के साथ मेलेमें भ्रमण कर रहे थे। एक स्थान पर एक बाबा माला फेर रहे थे, लेकिन बार-बार आँख खोल कर देख लेते कि लोगों ने कितने पैसे दान में दिये हैं। साधु हँसे व आगे बढ़े, आगे एक पण्डित जी भागवत कह रहे थे पर उनका चेहरा यन्त्रवत था - शब्द भी भावों से कोई संगति नहीं खा रहे थे, चेलों की जमात बैठी थी। उन्हें भी देखकर साधु खिल-खिलाकर हँस पड़े। इससे आगे बढ़ने पर साधुजी को एक चिकित्सक रोगी की परिचर्या करता मिला। वह घावों को धोकर मरहम पट्टी करता जाता। अपनी मधुर वाणी से उसे बराबर सांत्वना दे रहा था। यह देखकर साधु की आंखों में आंसू आ गए।

आश्रम लौटते ही शिष्यों ने पहले दो स्थानों पर हँसने व फिर रोने का कारण पूछा तो वे बोले - बेटा! पहले दो स्थान पर तो मात्र आडम्बर था पर भगवान के नाम के लिए आकुल एक ही व्यक्ति दिखा- वह चिकित्सक! उसकी सेवा भावना देखकर अन्दर से हृदय द्रवित हो उठा। न जाने कब जनमानस धर्म के सच्चे स्वरूप को समझेगा!

आध्यात्मिक

आसक्ति रहित होने पर ही प्रभु की प्राप्ति होगी

-कन्हैयालाल आर्य,
कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सत्य के साथ-साथ मनुष्य के शरीर का अंग-अंग शिथिल हो जाता है। बाल सफेद हो गये, मुख में दांत नहीं रहे, आंखों में ज्योति कम होने लगी। संसार दूर होता जा रहा है। सम्बन्धों की कड़ी टूटने लगी है। जिस संसार को हमने पकड़ रखा है, अब छूटने लगा। रोगों ने शरीर में घर बना लिया। परन्तु उसके पश्चात् भी मनुष्य का मन कितना विचित्र हैं कि व्याधियों से भरे हुए इस कांपते शरीर में भी अनेक प्रकार की आशाएं जगी है। जो हमें बार-बार ठुकराते हैं, हम उन्हीं के मोह में पड़ने की इच्छा होती है। जो संसार मिलकर बिछुड़ जायेगा, उसी संसार के प्रति आसक्ति बनी रहती है।

ऋषियों ने कहा है - हे मानव ! कब तक इस संसार की आसक्ति में पड़ा रहेगा। आशाएँ-आकांक्षाएं छोड़। प्रभु का भजन कर। बुद्धि से चिन्तन कर। आत्मा को समझ। अपने आप को बुद्धिमान कहलाने वाले मूर्ख। जिसका नाम जपना चाहिए था, उसका नाम जप। दुनिया का नाम तू जपता है, जिन संबंधों का, जिस तन पर तू अभिमान करता है, यह तेरे होने वाले नहीं है। यहां ऋषियों का भाव यह है कि इस शरीर की वास्तविकता को समझो। केवल उपयोग के लिए यह शरीर मिला है। यह एक साधन है। इसे साध्य मत समझ बैठो। संसार में अपनी यात्रा चलाओ, परन्तु शरीर को सब कुछ मत मानो। शरीर में बैठे हुए चेतन तत्व को जानो। इन अंग-प्रत्यंगों के माध्यम से जो भिन्न-भिन्न प्रकार के कर्म कर रहा है, इसे समझने का प्रयास करो।

हमारी आत्मा तोते के समान है और यह शरीर पिंजरे के समान है। जिस प्रकार तोता पिंजरे से प्यार कर के भिन्न-भिन्न प्रकार की बोलियां बोलता है। इसी प्रकार हमारी आत्मा भी इस शरीर के प्यार लगाए बैठी है। कभी उसके अन्दर बैठ कर रोती है, कभी हंसती है। कभी सुख को, कभी दुःख को अनुभव करती है। यदि हमारी आत्मा इस शरीर को प्यार करने के स्थान पर इसके अन्दर बैठे हुए परमात्मा को प्यार करना प्रारम्भ कर दे, उस अमृत को पीना प्रारम्भ कर दे तो सदा-सदा के लिए देह के बन्धनों से स्वतन्त्र हो जाये।

जिस समय आत्मा के सम्बन्ध इन्द्रियों से दूर हो जाता है, उस समय अंगों को काटने पर भी पीड़ा नहीं होती। जिस तरह डाक्टर शल्यक्रिया (आपरेशन) के समय जिस अंग का आपरेशन करना होता है, उसका सम्बन्ध शेष शरीर से काट देता है, अर्थात् उस समय उस का वह अंग सुन्न कर दिया जाता है, उस समय इस अंग में किसी पीड़ा का अनुभव नहीं होता। परन्तु जब वह अंग पुनः सुन्न की स्थिति से उबर कर आते हैं, तो उस समय उस दुःख का अनुभव होता है। यही अनुभव ही चेतन तत्व का बोध है। यही चेतन जिस दिन वह शरीर को त्याग देगा तो उस शरीर का कोई मूल्य नहीं रहेगा। इसकी सुन्दरता भी समाप्त हो जायेगी और यह भयानक हो जायेगा। इसकी पवित्रता भी समाप्त हो जायेगी। कोई भी इस स्पर्श करना भी पसन्द नहीं करेगा और यदि स्पर्श कर लिया तो उन हाथों को भी धोना पड़ेगा। कोई इसे अपने घर में अधिक देर तक नहीं रखेगा। शीघ्रातिशीघ्र इसका संस्कार करने का परामर्श मिलने लगेगा। जिस शरीर को देखकर परिवार वाले विशेषकर पत्नी जो सात जन्मों का साथ निभाने की कसमें खाती ती, पुत्र पौत्र आदि प्रसन्न हुआ करते थे, वही लोग आज इसे शीघ्र अति शीघ्र मुखाग्नि देने के लिए तत्पर हो जाते हैं। अतः हमें बैठकर विचार करना होगा कि यह शरीर क्या है ? इस शरीर में बैठा हुआ चेतन तत्व क्या है? संसार में हम किस लिए आये हैं, क्यों आएं है ? मेरे जीवन का परम लक्ष्य क्या है ?

व्यक्ति आज अहंकार रुपी रोग से पीड़ित है। ईट पत्थरों पर अपना नाम लिखकर कि यह भवन मेरे है, यह

फैक्टरी, दुकान मेरी है, ऐसा सोचकर प्रसन्न हो रहा है। परन्तु जब यह नाशवान शरीर अग्नि की भेंट चढ़ जाता है, तो यह सब कुछ पराया हो जाता है। अब हमें इस नाशरहित सत्य को समझना होगा। उस चेतन तत्व को जानना होगा। जिस तरह इस पेट की भूख, मिटाने के लिए भोजन करते हैं। मन को मनोरंजन करवाते हैं, इस प्रकार आत्मा रूपी चेतन तत्व की भूख को मिटाइये। आत्मा को तृप्त कीजिए। आत्मा की तृप्ति मिलेगी सेवा से, साधना से, सत्संग से, स्वाध्याय से, सन्तोष से, समर्पण से। भगवान् के अमृत रस से तृप्ति मिलेगी।

आप सोचिए जब आपके मन ने कहा कि कोई उपकार का कार्य किया जाये और आप ने कर लिया। परन्तु सिसे न तो आपका पेट भरा, न आपके मन को कुछ हुआ, न बुद्धि में कुछ बात आई। परन्तु आपके अन्तरमन में एक संतोष का अनुभव अवश्य हुआ। इस सन्तोष का परिणाम यह हुआ कि आपका हृदय आनन्दित हो जाता है। अपने आप खाकर वह आनन्द नहीं मिला होगा जो दीन दुखियों तथा भूखे-निर्धनों को खिलाकर होता है। मैं यह बात आपसे कहूं और आप मान लें, ऐसा नहीं। बल्कि इस कार्य को आप स्वयं करके देखें। आप अनुभव करेंगे कि आपको इन परोपकार के कार्यों से सन्तुष्टि मिल रही है। इसी सन्तुष्टि का नाम तो है प्रभु की निकटता।

परमात्मा को पाने के लिए बाल-बच्चों को त्यागने की आवश्यकता नहीं पड़ती, बल्कि संसार में रते हुए संसार के कार्य व्यवहार को करते हुए अपना कर्त्तव्य समझकर अपने अन्दर ही वैराग्य उत्पन्न करना है। खाने के लिए नहीं जीना, जीने के लिए खाना है। उस वैराग्य को धीरे-धीरे पक्का करते जाना है। यहां पर हमारा उद्देश्य यह न हो कि लोग हमारी प्रशंसा करे, हमारा मान सम्मान करें, हम को महत्व दें। यदि हम इन सारी बातों में पड़ जायेंगे तो हम अपने मार्ग से भटक जायेंगे। हमारा मुख्य लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है, वही हमारा उद्देश्य है। जिसको पाने के पश्चात् कुछ शेष नहीं रहता। जिस दिन मैं की भावना समाप्त हो जायेगी। जिस दिन हम यह कह देंगे कि कोई मेरा नहीं केवल प्रभु की शरण ही सच्ची है। संसार के कर्त्तव्यों को तो पूरा करेंगे परन्तु संसार में आसक्ति में नहीं पड़ेंगे। उस समय देह, स्थान, पदार्थ, सम्बन्धों की आसक्ति मिट जाएगी, सभी मोह-ममता के बन्धन टूट जायेंगे केवल और केवल प्रभु की प्राप्ति ही उद्देश्य बन जायेगा, तभी हमारा कल्याण होगा।

पता : ४/४४, शिवाजीनगर, गुड़गाँव, हरियाणा

सम्मति न दीजिये

नापृष्टः कस्यचिद् ब्रूयान्न चान्यायेन पृच्छतः।
जानन्नपि हि मेधावी जड़वल्लोकमाचरेत् ॥

भावार्थ - बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि - वह सब कुछ जानते हुए भी बिना पूछे किसी को अपनी राय न दे। कोई व्यक्ति अन्याय से मान लीजिये आप से कुछ पूछता है, आप जड़वत् आचरण करने लग जाइये। ऐसे कि- जैसे आप उस विषय में कुछ जानते ही नहीं है। सामने वाला आपको मूर्ख समझ रहा है और आप उसके सन्मुख मूर्ख बनकर भी उपदेश देते रहें यह ठीक नहीं है।

जो आपकी सम्मति का आदर करता हो उसे ही आप अपनी शुभसम्मति दीजिए।

- सुभाषित सौरभ

ज्वलन्त समस्या

किताबों में कुलबुलाते कलह के कीड़े

रमेश दवे

शराब और किताब सरकारों पर इस कदर हावी है कि इन पर कभी भी बिना सोचे-विचारे नए-नए कर्मकांड रच दिए जाते हैं

यह कैसा देश है कि यहाँ के नीति-निर्माता, नेता, शिक्षाविद्, शिक्षक और पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तक बनाने वाले, सबके सब प्राथमिक स्कूल से लेकर इग्नू जैसे विश्वविद्यालय तक की शिक्षा से नफरत का जहर पैदा कर रहे हैं, बचपन बांट रहे हैं, किशोरों को बांट रहे हैं और उच्च शिक्षा में हमारी युवा शक्ति को बांट रहे हैं। क्या शिक्षा के पाठ्यक्रमों के लिए आर्य-अनार्य का विवाद, धार्मिक विश्वासों का अपमान, गोमांस खाने का इतिहास और महापुरुषों के चरित्र हनन की सामग्री ही कोर्स में रखने के लिए बची है ? यदि रामायण-गीता में कुछ आदर्श और कर्म के प्रति आस्था है, कुरान शरीफ में प्रेम और इंसानियत के संदेश है, बाइबिल में दया और क्षमा की वाणी है और ग्रंथ साहब में सर्वधर्म समभाव की मिसाल है, तो इन सबको छोड़कर ऐसे प्रकरण शिक्षाविद् और पाठ्यपुस्तक निर्माता क्यों खोज रहे हैं जिनसे महापुरुषों का अपमान हो, उन्हें नंगा, लुटेरा और मांसाहारी बताया जाए ? यदि ये विवादास्पद विषय पढ़ाने योग्य भी हैं तो क्या उन्हें उच्च शिक्षा या शोध के स्तर पर नहीं पढ़ाया जा सकता जहां छात्रों का विवेक स्वयं तय कर सकता है तथ्य क्या है और सत्य क्या है ?

सौ फीसदी प्रयास करने के बाद जो कुछ बचता है, उसे भाग्य कहते हैं

गत कुछ सालों में एक अजीब राजनीति चल पड़ी है। शराब और किताब सरकारों पर इस कदर हावी है कि कभी शराब बेचने की खुली छूट दे दी जाती है तो कभी किताबों के नए-नए कर्मकांड रच दिए जाते हैं। योग्य, चिंतनशील लोग और शिक्षाविद् बोलते क्यों नहीं, अभिभावक ऐसी बातों को नकारते क्यों नहीं और खुला विरोध करते हुए यह क्यों नहीं कहते कि हमारे बच्चों को वह सब नहीं पढ़ाया जाए जो किसी को हिन्दू, किसी को मुसलमान कहकर बांटता हो। बच्चों को बच्चों की तरह रहना सिखाते के बजाय उन्हें कोई चड्डी पहनाना, तो कोई जालीदार टोपी लगाना सिखाता हो। बच्चे इस देश का भविष्य हैं। उन्हें देश का सही और सच्चा नागरिक और अच्छा इंसान बनाना शिक्षा का नाम है न कि किताबों में नफरत के कीड़े डालकर किसी को हिन्दू किसी को मुसलमान और किसी को सवर्ण और किसी को पिछड़ा बताना। क्या राजनीति और शिक्षा के पास चिंतन के लिए और कुछ बचा ही नहीं जो वे हर स्तर पर किसी न किसी विषय का विवाद रचकर किताबों की संस्कृति, शिक्षा की सभ्यता और जीवन के प्रति आस्था का अपमान करते जा रहे हैं ? अगर हमारे पास इतनी विराट प्रकृति है तो उसका तो हर हिस्सा एक पाठ्यक्रम है, उसका हर विषय कई-कई पाठ्यपुस्तकों की रचना कर सकता है। इस देश की राजनीति भी अजीब है। कोई दल जरुरत से ज्यादा तथाकथित देशभक्ति का जुनून पाले हुए है तो कोई दल देश, नागरिक और नैतिकता में विश्वास ही नहीं करता। किसी को महापुरुष अपने दल के लगते हैं तो किसी को महापुरुष महापुरुष लगते ही नहीं। जो लोग गरीबों के नाम पर क्रांति की बारुद बिछाना चाहते हैं उन्हें यह सोचना चाहिए कि बारूद, बम और बंदूक प्यार करने के औजार नहीं है, वे शिक्षा से आनंद छीनकर आंतक रचने के हथियार हैं। ऐसा क्यों होता है कि स्कूल किसी खराब छवि वाले थाने में बदल रहे हैं। वहां कभी बच्चों के साथ यौनाचार होते हैं, कभी मारपीट से बच्चे अपंग हो रहे हैं या मर रहे हैं तो कभी सामूहिक नकल हो रही है और नकल रोकने पर चाकू चल रहे हैं? क्या किताबों में महापुरुषों और आर्यों या गोमांस खाने या मांस पकाने की रेसीपी देने से सबक निकालना चाहिए ? सोचना होगा उनको जो पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तक बनाने वाली संस्थाओं के साथ शिक्षाविदों और विद्वानों का चेहरा पहनकर किताबों से नफरत के कीड़े पैदा कर रहे हैं।

(लेखक जाने-माने शिक्षाविद् व साहित्यकार हैं)

वैज्ञानिक अधोगमन का सिद्धान्त

-अजय शर्मा

एक दिन सुबह सुबह मेरे मित्र आशीष डे अपनी कार निकाल कर उसे प्रारम्भ करने की कोशिश कर रहे थे। कार शुरु ही नहीं हो रही थी। आवाज सुनकर मैं बाहर आ गया। फिर धीरे धीरे और लोग भी एकत्र हो गए। भूपिंदर सर ने पूछा सर पहले देख लीजिए पेट्रोल है कि नहीं ? तो डे सर ने जवाब दिया अभी तो पांच लीटर पेट्रोल डाला है। तब उपाध्याय सर ने सुझाव दिया कि डे सर ऐसा करें आप अंदर बैठकर स्टियरिंग संभालें हम लोग धक्का देते हैं शायद स्टार्ट ले ले। डे सर ने हामी भर दी और कार के भीतर बैठ गए। हम चार पांच मित्रों ने कार को पीछे धक्का दिया। कार दौड़ने लगी डे सर ने गियर लगाया और कार स्टार्ट हो गई। डे सर की कार को अभी साल भर भी नहीं हुआ है फिर धक्के की नौबत क्यों आई ? वो इसलिए कि उपयोग न होने की वजह से कार की बैटरी डाऊन हो गई थी। इस घटना ने मुझे सिखाया कि नई कार भी अगर रखी रहे तो धक्का मार हो जाती है।

ठीक इसी प्रकार घर पर उपयोग होने वाली लोहे की वस्तुएँ यदि उपयोग में ना लाई जावे तो उस पर जंग लगने लगती है। अर्थात बिना उपयोग के लोहे की वस्तुओं में क्षरण होने लगता है। एक खिलाड़ी यदि लगातार प्रयास करें, अभ्यास करे तो लंबे समय तक अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन करता रहता है और अगर वह अभ्यास न करे तो उसके खेल का स्तर निरन्तर गिरता जाता है। बिना प्रयास किए उच्च स्तरीय प्रदर्शन संभव नहीं है डॉ बिना अभ्यास के बुरा प्रदर्शन जरुर संभव है। आपने यह तो अनुभव किया ही होगा कि अपने गर के बगीचे में यदि हम कोई ध्यान न दें तो अनावश्यक खरपतवार उग जाती है। तरह तरह के पौधे उग जाते हैं जो बगीचे की शोभा को कम करते हैं। बिना प्रयास के बगीचे में अपने आप कोई गुलाब का पौधा या कोई और मौसमी फूल का पौधा नहीं उगता, अगर हम चाहते हैं कि हमारी बगिया में सुन्दर सुन्दर फूलों के पौधे हो तो इसके लिए हमें प्रयास करना होता है। हमें सबसे पहले तो बाग में अनावश्यक घासफूस हटाना पड़ता है फिर मिट्टी को खोदकर खाद मिलानी पड़ती है जमीन तैयार करनी पड़ती है तब मौसमी फूलों के बीज डालकर रोज पानी देना पड़ता है, उसकी देखभाल करनी पड़ती है। जानवरों से और पड़ोसियों से उसकी रक्षा करनी पड़ती है, तब आपके बाग में रंग बिरंगे फूल खिलते हैं और बगिया की शोभा बढ़ती है। कई बार मैंने माताओं को यह शिकायत करते सुना है कि उसका बच्चा न जाने कहां से अपशब्द सीखकर आ जाता है। ऐसी ऐसी हरकत करता है कि कई बार उन्हें परिचितों के आगे शर्मिंदा होना पड़ता है जबकि उन माताओं ने घर पर उसे ये सब कुछ सिखाया ही नहीं होता है। बच्चों में सीखने की क्षमता बहुत अधिक होती है यदि हम बड़े लोग उन्हें अच्छी बातें नहीं सिखाएंगे तो वह बाहर से वैसी बात सीख आएगा जिन्हें हम बुरा कहते हैं। ऐसा लगता है कि बच्चा बुराई अपने आप सीख लेता है किन्तु अच्छे गुण, अच्छी आदतें उसे सीखानी पड़ती है। बच्चे ज्यादातर देख कर सीखते हैं अगर माता-पिता के पास अपने बच्चे के साथ गुजारने के लिए समय न हो तो बच्चा ज्यादा समय जिनके साथ गुजारेगा उन जैसा ही आचरण करेगा, उन्हीं की बातों एवं कार्यों को दुहराएगा। अगर हम कहते हैं कि बच्चा हमारी अपेक्षा के अनुरुप हो तो हमें बच्चें के साथ समय गुजारना होगा, उसके साथ वैसा ही आचरण पेश करना होगा, जिसकी हमें अपेक्षा है। बच्चे में सद्गुण विकसित करने और उसमें अच्छी आदतें डालने हेतु बच्चे के साथ साथ हमें भी प्रयास करना पड़ता है। हमारे द्वारा बच्चे की उन्नति हेतु प्रयास नहीं किए जाने पर बच्चे का पतन स्वतः होने लगता है।

कोई विद्यार्थी यदि अपने सीखे हुए पाठ की पुनरावृत्ति न करे तो धीरे धीरे वह अपना सीखा हुआ ज्ञान खोने लगता है, भूलता जाता है। अर्थात् पुनरावृत्ति एवं अभ्यास के अभाव में सीखी हुई बातें भी विस्मृत होती जाती है। सीखी हुई बात स्मृति में रहे इसके लिए हमें प्रयास करना होता है बिना प्रयास के बातें विस्मृत हो जाती है। कोई विद्वान् व्यक्ति यदि अपने

ज्ञान का उपयोग न करे तो कहें कि ज्ञान को बनाए रखने का प्रयास न करे तो उसकी गिनती मूर्खों में होने लगती है।

जब कोई व्यक्ति तरणताल में तैरने के लिए उतरता है तो यद्यपि जल का उत्प्लावन बल उस व्यक्ति के शरीर को ऊपर की ओर उठाता है तथापि व्यक्ति का शरीर जल में डूबने लगता है। चूंकि उस व्यक्ति के द्वारा अपने शरीर को जल में ऊपर रखने हेतु कोई प्रयास नहीं किया गया। अतः शरीर की जल में नीचे की ओर स्वाभाविक गति होती है, जब वही व्यक्ति हाथ पैर हिलाकर कुछ प्रयास करता है तो उसका शरीर जल की सतह पर आ जाता है। अर्थात् शरीर को जल की सतह पर रखने हेतु हमें प्रयास करना होता है अन्यथा शरीर की जल में नीचे की ओर स्वाभाविक गति होती है।

कोई अगर अपने शरीर व स्वास्थ्य के प्रति सजग न हो, अपने खानपान को नियंत्रित न करें, शारीरिक श्रम न करे, व्यायाम से दूर ही रहता रहे तो बहुत संभव है कि उसका शरीर बेडौल होने लगेगा और हो सकता है उसे स्वास्थ्य संबंधी कठिनाईयों का सामना करना पड़े। हाँ कोई व्यक्ति संतुलित भोजन ग्रहण करे आवश्यकता से अधिक भोजन ग्रहण न करे अर्थात् अपने भोजन की मात्रा को नियंत्रित करे, शारीरिक श्रम करता हो, प्रतिदिन नियमित व्यायाम करे तो उसका शरीर चुस्त दुरुस्त रहता है, फूर्तिला होता है। उसके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी पहले वाले व्यक्ति की तुलना में अधिक होती है। वह हृष्ट पुष्ट और स्वस्थ रहता है। अपने आसपास किसी खिलाड़ी के शरीर एवं शारीरिक श्रम न करने वाले व्यक्ति के शरीर में अंतर आसानी से देखा जा सकता है। अर्थात् अपने शरीर को चुस्त दुरुस्त, लचीला, निरोगी एवं आभावान बनाने हेतु हमें प्रयास करना होता है, वहीं दूसरी ओर बिना प्रयास के शरीर की क्षमता कम होती जाती है।

मेरे एक मित्र हैं उन्होने अपने सेवाकाल में रहते रहते एक आलीशान मकान बनवाया। सरकारी सेवा में होने के कारण उनका स्थानान्तरण एक जगह से दूसरी जगह होता रहा और उन्होने अपने मकान को यूं ही ताला मारकर बंद रखा। उपयोग न होने व देखभाल के अभाव में दरवाजे खिड़कियों पर दीमक ने हमला कर दिया, कमरे के भीतर की जमीन चूहों ने खोदकर रख डाली, दीवारों पर मकड़ी के जाले लग गए। नया मकान भी पुराने मकान की भांति नजर आने लगा। देखभाल के अभाव में क्षरण हमें हर जगह दिखाई पड़ जाता है।

वस्तुएं सदैव ऊपर से नीचे की ओर ही गिरती है। जल की यह सहज प्रवृत्ति है कि वह हमेशा ऊंचे स्थान से नीचे स्थान की ओर बहता है। वायु सदा ही उच्च दाब वाले क्षेत्र से कम दबाव वाले क्षेत्र की ओर बहती है। उष्मा का प्रवाह सदैव उच्च ताप से निम्न ताप की ओर होता है। तरल उच्च घनत्व से निम्न घनत्व की ओर विसरित होता है। आवेश का विसरण भी उच्च घनत्व से निम्न घनत्व की ओर होता है। विद्युत का प्रवाह उच्च विभव की ओर होता है। यूं ही पड़े रहने पर हीरे की चमक भी फीकी पड़ने लगती है। इस प्रकृति में न केवल जीव बल्कि जड़ में भी ऊपर से नीचे की ओर गति का स्वभाव परिलक्षित होता है। मित्रों उक्त सारे उदाहरणों में आपके कुछ उभयनिष्ठ नजर आ रहा है ? उक्त सारे उदाहरण किस ओर इंगित कर रहे हैं ? जी हाँ, उक्त सभी उदाहरणों में ऊपर से नीचे की ओर स्वतः गमन ही उभयनिष्ठ है। उक्त सारे उदाहरण प्रकृति में विद्यमान अधोगमन के सिद्धान्त की ओर ही इंगित कर रहे हैं। जीव हो या जड़ सभी पर यह अधोगमन का सिद्धान्त प्रभावी है। इस अधोगमन के सिद्धान्त की वजह से ही कर्म इतना महत्वपूर्ण है।

मान लीजिए प्रकृति में उर्ध्वगमन का सिद्धान्त प्रभावशील होता तो सभी जीव एवं जड़ स्वतः ही नीचे से ऊपर की ओर अग्रसर होते और उन्नति के लिए कर्म की आवश्यकता ही नहीं रह जाती, वह कर्म शून्य की स्थिति होती जिसमें कर्म का महत्व ही नहीं रह जाता। प्रकृति ने जग में अधोगमन का सिद्धान्त प्रभावशील करके हमें कर्म के महत्व को बताने का प्रयास किया है। कर्म करके ही हम उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं। गीता में भी कहा गया है **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन**। उन्नति की चाह रखने वाले मनुष्य को फल की चिंता किए बगैर सतत् कर्म करते रहना चाहिए। कर्मानुसार कर्म का फल अवश्य ही प्राप्त होता है।

पता : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल एसईसीएल, छाल, जिला-रायगढ़ (छ.ग.)

विचारात्मक

'महापुरुषों के प्रेरक एवं श्रद्धास्पद- महर्षि दयानन्द'

- मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द महाभारत काल के बाद विगत पांच हजार वर्षों में वेदों के पहले ऋषि हुए हैं। उन्होने वेदों का संस्कृत और हिन्दी में सत्य वेदार्थ वा भाष्य करके मानवता का जो उपकार किया है उसके लिए संसार उनका सदा सर्वधा ऋणी रहेगा। महर्षि दयानन्द को ही इस बात का श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने सच्चे ईश्वर के स्वरुप को जनसामान्य तक प्रचारित ही नहीं किया अपितु जड़ देवी-देवताओं के यथार्थ स्वरुप से भी सबको परिचित कराया और बताया कि सभी देवी-देवताओं में उपासनीय केवल सृष्टिकर्ता सच्चिदानन्दस्वरुप ईश्वर ही है। उन्होने तर्कों व प्रमाणों से सिद्ध किया कि ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना प्रत्येक मनुष्य का परम कर्त्तव्य है। जो मनुष्य ईश्वर के सत्य स्वरुप को जानने का प्रयत्न नहीं करते और यथासमय ईश्वरोपासना अर्थात् सन्ध्या वा योगाभ्यास नही करते वह कृतघ्न होते हैं। कृतघ्न इस कारण कि जिस ईश्वर ने हमारे लिए यह समस्त संसार वा ब्रह्माण्ड अर्थात् सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, वायु, जल, समुद्र, नदियां, झरने, पर्वत, मैदान, रेगिस्तान, वन, वृक्ष, नाना प्रकार के फल-फूल बनाकर व हमें मनुष्य का जन्म देकर माता-पिता-विद्वानों आदि से उपकृत किया है, उसे जानने का प्रयास न करना और जानकर उसकी स्तुति-प्रार्थना और उपासना न करना महा-कृतघ्ना है। हम यह भी जोड़ना चाहते है कि जो ईश्वर के सत्य स्वरुप को न जानकर अवधि से भक्ति वा उपासना करता है वह भी एक प्रकार से कृतघ्नों की श्रेणी में ही आता है। इसका कारण यह है कि जिस ईश्वर ने हमें इतने सुख व सुख की सामग्री प्रदान की है क्या हमारा यह कर्त्तव्य नहीं बनता कि हम उसके यथार्थ स्वरुप को जानकर उपयुक्त विधि से उसकी उपासना करें? जो ऐसे नहीं करते वह कृतघ्न ही कहे जा सकते हैं। अतः सभी मनुष्यों को ईश्वर के सत्य स्वरुप को जानकर उसकी उपासना करनी चाहिए। ईश्वर के सत्य स्वरुप को जानने व सही विधि, आर्याभिविनय, पंजमहायज्ञविधि, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि सहित उनके जीवन चरित्र आदि का अध्ययन भी सहायक है एवं इनसे लाभ उठाना चाहिए और मानव जीवन को सफल कर जीवोन्नति करनी चाहिये, जिससे अभ्युदय व निःश्रेयस की प्राप्ति हो सके।

प्रस्तुत लेख में हम महर्षि दयानन्द के विषय में देश के कुछ विद्वानों के विचार प्रस्तुत कर रहे हैं, जिनसे उनके स्वरुप व व्यक्तित्व पर कुछ प्रकाश पड़ता है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि **महर्षि दयानन्द जी के उपदेशों ने करोड़ों लोगों को नवजीवन, नवचेतना और नया दृष्टिकोण प्रदान किया है।** देश की आजादी के लिए अपना जीवन एवं सर्वस्व समर्पित करने वाले और दो जन्मों के कारावास की सजा पाने वाले महान् क्रान्तिकारी और देशभक्त **वीर विनायक सावरकर जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी स्वाधीनता संग्राम के**

सर्वप्रथम योद्धा और हिन्दू जाति के रक्षक थे। उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने राष्ट्र की महान सेवा की है और कर रहा है। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का नाम जिह्वा पर आते ही हृदय उनके उपकारों व देशभक्ति के कार्यों को स्मरण कर उनके प्रति श्रद्धा से भर जाता है। वह वस्तुतः भारत माता के अनूठे, महान्, परम देशभक्त सपूत थे और उन्होने अपना सर्वस्व भारत माता को अर्पित किया है। वह महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज की प्रशंसा करते हुए कहते है कि **संगठन, कार्य दृढ़ता, उत्साह और समन्वयात्मकता की दृष्टि से आर्यसमाज की समता कोई नहीं कर सकता। महर्षि दयानन्द के विषय में श्री अनन्तशयनम् आयंगर जी ने लिखा है कि गांधी जी राष्ट्र के पिता थे, तो महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्र के पितामह थे।** श्री आयंगर जी ने इस कथन के आधार पर हम यह कहना चाहेंगे कि श्री आयंगर जी ने जितना महर्षि दयानन्द को समझा था उतना किसी राजनैतिक दल व उनके नेता ने उन्हें नहीं समझा अथवा महर्षि दयानन्द जिस सम्मान के अधिकारी थे, राजनैतिक कारणों से वह उनको प्रदान नहीं किया गया।

देश की आजादी में लाला लाजपतराय जी का महान योगदान है। शहीद भगतसिंह ने लालाजी पर अंग्रेजों के अत्याचारों के कारण ही सांडर्स को अपनी पिस्तौल का निशाना बनाया था, जिसमें शहीद चन्द्रशेखर आजाद, शहीद सुखदेव, शहीद राजगुरु, आजादी के जीवित शहीद दुर्गाभाभी व अन्य अनेक क्रान्तिकारी सम्मिलित थे। लाला लाजपतराय जी लिखते है कि **स्वामी दयानन्द जी मेरे गुरु हैं। मैंने संसार में केवल उन्हीं को गुरु माना है। वे मेरे धर्म के पिता है और आर्यसमाज मेरी धर्म की माता है।** भारत के प्रथम प्रधानमंत्री और तेजस्वी व यशस्वी गृहमंत्री लौहपुरुष सरदार वल्लभाई पटेल ने भी महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि देते हुए कहा है कि **मैं ऋषि दयानन्द जी को अपना राजनैतिक गुरु मानता हूँ। मेरी दृष्टि में तो ये महान् विप्लववादी नेता और राष्ट्र विधायक थे।** हम सभी यह जानते है कि लगभग ६०० स्वतन्त्र रियासतों सहित कश्मीर का भारत में विलय कराने में सरदार पटेल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका थी। यदि वह राजनैतिक में न होते तो कह नहीं सकते कि स्वतन्त्र भारत का स्वरुप क्या होता परन्तु यह निश्चित है कि जो अब है वह कदापि न होता क्योंकि अनेक रियासतें या तो स्वतन्त्र रहतीं या पाकिस्तान आदि में अपना विलय करती जो कश्मीर की ही तरह भारत के लिए सिरदर्द का काम करतीं। देश की आजादी के एक और प्रमुख नेता और **क्रान्तिकारी देवतास्वरुप भाई परमानन्द** ने भी महर्षि दयानन्द को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। भाई परमानन्द जी जब अफ्रीका में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ गये थे तो महात्मा गांधी ने वहां उनके दर्शन कर सान्निध्य प्राप्त किया था और श्रद्धावश उनका बिस्तर अपने कंधे वा सिर पर उठा लिया था। परमानन्द जी ने लिखा है कि **स्वामी दयानन्द एक ऐसे प्रकाश के स्तम्भ है जिन्होने असंख्य मनुष्यों को सत्य का मार्ग बतलाया है। मैं अपने को उनका अनुयायी कहलाने में गर्व अनुभव करता हूँ।**

यह भी उल्लेखनीय है कि आजादी के आन्दोलन में काकोरी काण्ड के विख्यात मास्टरमाइण्ड शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल उनकी साक्षात शिष्य परम्परा में थे। शहीद अशफाक उल्ला खाँ के साथ उनकी मित्रता व सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध जातीय वा कौमी एकता का प्रशंसनीय उदाहरण है। यह भी तथ्य है कि देश की आजादी के आन्दोलन में लगभग ८० प्रतिशत आन्दोलनकारी महर्षि दयानन्द व उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित होते थे। क्रान्तिकारियों के अग्रणीय व अद्यगुरु व आचार्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा भी उनके साक्षात शिष्य थे व उन्हीं की प्रेरणा से इंग्लैण्ड गये थे। उनकी परम्परा में वीर सावरकर एवं अन्य क्रान्तिकारी हुए हैं।

महाराष्ट्र के महादेव गोविन्द रानाडे महर्षि दयानन्द के साक्षात शिष्य थे। आपने ही उन्हें पूना में आमंत्रित कर उनके प्रवचन कराये थे। श्री रानाडे गोपालकृष्ण गोखले के राजनैतिक गुरु थे और गोखले जी के शिष्य महात्मा गांधी थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि देश की आजादी की नरम व गरम दोनों धाराओं के आद्यगुरु महर्षि दयानन्द थे। **इस आधार पर कांग्रेस के नेता श्री अनन्तशयनम् अय्यंगर**

जी का महर्षि दयानन्द को देश का पितामह कहना सर्वथा उचित व युक्तिसंगत है। अमेरिकन महिला मैडम बेलवेटस्कीने उनको श्रद्धांजलि देते हुए कहा था कि जब भारत में आजादी का मन्दिर बनेगा तो उसमें सबसे ऊंची मूर्ति महर्षि दयानन्द की होगी।

हम अपने अध्ययन के आधार पर यह कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द जैसा देशभक्त, ईश्वरभक्त, वेदभक्त, मानवमात्र का हितैषी, सत्यप्रेमी, असत्यद्वेषी, वेदप्रचारक, वेदर्षि महर्षि आप्तपुरुष, योगेश्वर ईश्वर के सच्चे स्वरुप अनुसंधानकर्ता व प्रचारक, वेदों के उद्धारक, अवैदिक मूर्तिपूजा के खण्डनकर्ता, स्वराज्य-सुराज्य का मन्त्रदाता एवं पोषक, वैदिक अहिंसक यज्ञों के पुनरोद्धारक प्रचारक व उन्हें वैज्ञानिक आधार पर स्थापित करने वाला, मानवमात्र के हितैषी भगवान् मनु पर लगाये गये मिथ्या आरोपों व दोषों से उन्हें मुक्त व निर्दोष सिद्ध करने वाला, स्त्रियों की शिक्षा, उनके स्वयंवर विवाह, स्त्रियों का वेदाध्ययन, उनके ऋषिका बनाने का मार्ग प्रशस्त करने वाला व उन्हें पुरुषों के समान वरन् उनसे कुछ अधिक अधिकार प्रदान करने वाला, शूद्रों, श्रमिकों, निर्धनों व किसानों का सच्चा समर्थक, हितैषी व उद्धारकर्ता तथा उन्हें वेदाध्ययन का अधिकार देकर उन्हें मानव समाज के शिखर पुरुष अर्थात् ऋषि-ब्राह्मण बनाने का अवसर देने वाला उनके समान अन्य महापुरुष देश व संसार में दूसरा नहीं हुआ। उनके सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका वं वेदभाष्य आदि ग्रन्थों से शिक्षा व प्रेरणा ग्रहण कर व उसे क्रियान्वित कर ही हमारा देश संसार का गुरु बन सकता है।

पता - १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

कम से कम इतना तो अवश्य ही करें।

१. घर में बच्चों के साथ मातृभाषा में ही बोले।

२. मांस मछली अण्डा आदि अभक्ष्य पदार्थ तथा मद्य आदि बुद्धिनाशक पदार्थों का सेवन न करें।

३. अत्यन्त भड़कीले, महंगे, अश्लील, कामवासना को भड़काने वाले वस्त्रों तथा कृत्रिम श्रृंगार के साधनों का प्रयोग करके मिथ्या रुप, रंग, आकार, सुन्दरता दिखाने का प्रयत्न न करें।

४. जहां तक हो सके उत्तम सात्विक पकवानों को घर में ही बनावें तथा इष्ट मित्रों सम्बन्धियों को घर पर बुलाकर खिलावें और उनके घर पर जावें, होटलों रेस्टोरेंट का प्रयोग न करें। फूड पैकेट्स का प्रयोग भी आवश्यक होने पर करें।

५. सप्ताह में एक बार या १५ दिन में एक बार अवसर निकालकर सामाजिक, धार्मिक, स्थानों पर सत्संग, प्रवचन, ध्यान, स्वाध्याय हेतु अवश्य जावें। बच्चों को भी साथ ले जावें।

६. आमदनी का दूसरा या तीसरा प्रतिशत अलग करके सर्वहितकारी धार्मिक कार्यों में खर्च करें या दान देवें।

७. प्रतिदिन १० मिनट ही सही बच्चों को पास में बिठाकर उनको ईश्वर, धर्म, संस्कृति, इतिहास, शिष्टाचार तथा आदर्श परम्पराओं की शिक्षा करें।

८. प्रतिदिन १० मिनट के लिए एकान्त स्थान में आंखे बन्द करके निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, सर्वज्ञ ईश्वर का ओ३म् अथवा गायत्री मन्त्र के द्वारा ध्यान करें।

९. पांच या सात मिनट के लिए वेद, दर्शन, गीता, रामायण आदि धार्मिक आध्यात्मिक ग्रन्थ का स्वाध्याय करें।

१०. सोलह वर्ष तक के बच्चों को अच्छे कार्य के लिए प्रशंसा, पारितोषिक देवें, किन्तु गलत कार्यों की ताड़ना करें तथा दण्ड भी देवे।

११. जहां तक हो सके माता-पिता, भाई-बहन आदि के साथ एक ही घर में या निकट ही रहें।

१२. सोने से पूर्व दो-तीन मिनट के लिए आंखे बन्द करके अपनी गलतियों, भूलों का पता लगाएं तथा उनको दुबारा न करने का सकल्प लें तथा दण्ड भी ग्रहण करें।

वैचारिक "पूर्ण ब्रह्मचारी कौन होता है"

- खुशहालचन्द्र आर्य

ब्रह्मचारी का तात्पर्य होता है, ब्रह्म में विचरने वाला। ब्रह्म की आज्ञा के अनुसार मतलब होता है देने वाला। ईश्वर हमें जल, वायु, अग्नि, पेड़-पौधे, फल-फूल सब कुछ बिना कोई शुल्क लिए मुफ्त में देता है। सृष्टि को रचता है, पालन करता है और समय के अनुसार उसका संहार भी करता है और हम जीवों को उसके कर्मानुसार फल भी देता है, इसलिए सबसे बड़ा है और बड़ा होने के नाते ब्रह्म कहलाता है। धार्मिक ग्रन्थों में सबसे बड़े वेद होते हैं, जिसमें मनुष्य मात्र की सभी कल्याण व हित की बातें लिखी है, जिसके अनुसार चलने से मनुष्य अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। इसलिए वेद धार्मिक ग्रन्थों में सबसे बड़े हैं। इसी प्रकार शरीर में सबसे महत्वपूर्ण व मूल्यवान जो वस्तु है, वह वीर्य है। इसीलिए वीर्य को भी ब्रह्म कहा गया है। इस प्रकार हमने देखा कि ब्रह्म तीन विशेष शक्तियों को कहा गया है। जो व्यक्ति इन तीनों पर पूरा अधिकार रखता है वह पूर्ण ब्रह्मचारी कहलाता है। इन तीनों की हम संक्षिप्त व्याख्या करते हैं जो इसी भांति है।

१. ईश्वर :- ईश्वर केवल मनुष्यों का ही नहीं बल्कि प्राणीमात्र का बड़ा उपकार करता है। ऊपर लिखे अनुसार ईश्वर प्राणी मात्र को बिना कोई शुल्क लिए मुफ्त में हवा, पानी, बिजली, अन्न, फल-फूल आदि बिना किसी स्वार्थ के जीवों को प्रदान करता है। मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ तथा अन्तिम कृति है, इसलिए इसका विशेष कर्त्तव्य बन जाता है कि वह उस परोपकार परमपिता परमात्मा के गुण-गान करके अपनी कृतज्ञता प्रकट करें, यानी अपने मन को अन्तर्मुखी बनाकर एकाग्र चित्त होकर सन्ध्या के द्वारा उसके गुणगान करे साथ ही उसके गुणों को जैसे दया, करुणा, निष्पक्षता, परोपकारिता आदि को अपने जीवन में धारण करें, जिससे अपना तथा दूसरों का जीवन सुखी व सम्पन्न बने। ईश्वर ने हमें उत्पन्न किया है, इसलिए ईश्वर हमारा माता-पिता हुआ और हम सब उसके पुत्र व पुत्रियाँ हुए। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने पिता के गुणों को अपने जीवन में धारण करें और उसकी आज्ञा का पालन करें। ईश्वर के गुण-गान करने से ईश्वर को कोई लाभ नहीं परन्तु मनुष्य को अनेक लाभ है। ईश्वर की सन्ध्या द्वारा स्तुति, प्रार्थनोपासना करने से मनुष्य को उत्साह, उमंग, साहस व एक प्रकार के आनन्द की अनुभूति होती है। जिससे उसकी जीवन में सुख व शान्ति की प्राप्ति होती है। इसलिए ब्रह्मचारी को एक सच्चा ईश्वर उपासक भी होना चाहिए। इसके अभाव में वह पूर्ण ब्रह्मचारी नहीं कहलायेगा।

२. वेद :- ईश्वर ने सृष्टि के आदि में जब मनुष्यों की उत्पत्ति तिब्बत के पठार पर की थी, तभी ईश्वर ने चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा था, उनके हृदय में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद है, उनका क्रमशः प्रकाश करके उनके मुख से उच्चारित करवाये। जिनमें वे सभी उपदेश व शिक्षाएं बताई है, जिनके अनुसार चलने से मनुष्य अपने जीवन को तथा दूसरों के जीवन सुखी व सफल बना सकता है। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो सिखाने से सीखता है और बिना सिखाये वह अज्ञानी ही बना रह जाता है। ईश्वर सब मनुष्यों को पिता होने के नाते उसका कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपने पुत्रों व पुत्रियों को अच्छी शिक्षा दे, जिसको पढ़कर वह अपने जीवन को सुचारु रुप से चला सके और अपने जीवन को उत्तरोत्तर उन्नति करता हुआ मनुष्य का जो अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है उसको प्राप्त कर सके। इसलिए मनुष्य पूर्ण ब्रह्मचारी तभी हो सकता है जब वेदों को मन लगाकर पढ़ेगा और उसके अनुसार उच्चारण करके अपने जीवन व अन्यों के जीवन को सुन्दर, पवित्र व सुखी बनायेगा। इसलिए पूर्ण ब्रह्मचारी बनने के लिए उसको वेदों का पढ़ना तथा उसके अनुसार आचरण करना यानि वेदोनुसार चलना बहुत जरुरी है।

३. वीर्य की रक्षा करना :- शरीर में सबसे महत्वपूर्ण व

मूल्यवान वस्तु वीर्य है। इसलिए इसको भी ब्रह्म की संज्ञा की दी गई है। हम जो भोजन करते हैं, वह भोजन सात रुपों में परिवर्तित होता हुआ, उसका अन्तिम रुप वीर्य कहलाता है। भोजन जब हमारे पेट में जाता है तो सबसे पहले उसका रस, फिर रक्त, फिर मांस, फिर मंज्जा, फिर मेध (चर्बी), फिर अस्थी (हड्डी) फिर अन्त में वीर्य बनता है। जो बहुत कम मात्रा में बनता है। वीर्य जैसी कीमती वस्तु को बिना उद्देश्य केवल कुछ क्षणों के लिए सुख का अनुभव करने के लिए उसे व्यर्थ में नष्ट करता है, वह बड़ा दुर्भाग्यशाली तो है ही साथ ही बड़ा मूर्ख व अज्ञानी भी है। वीर्य को सुरक्षित रखना या खण्डित करना मनुष्य के जो चार पुरुषार्थी है, उनके करे की प्रवृत्ति से संबंधित है। वे चार पुरुषार्थ यह है, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। वीर्य की रक्षा करना काम पुरुषार्थ में आता है। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह अपना जीवन धार्मिक बनावे यानि सच्चाई, ईमानदारी, दया, करुणा व परोपकारिता आदि को अपने नियन्त्रण में रखे और सीमा के अन्दर ही इनका प्रयोग कर, तभी मनुष्य सुखी व आनन्दित बन सकता है। मनुष्य का दूसरा पुरुषार्थ अर्थ है। यह भी धर्म के साथ ही कमाना चाहिए। यदि अर्थ कमाने में धर्म की प्रवृत्ति नहीं रखेंगे तो वह अर्थ, अनर्थ हो जायेगा, जिससे वह स्वयं भी दुःखी होगा और दूसरों को भी दुःखी करेगा। तीसरा पुरुषार्थ काम है, इसको भी धर्म के अनुसार ही करना चाहिए। जो व्यक्ति अविवाहित रह कर वीर्य की रक्षा का पूरा ध्यान रखता है, वही पूर्ण ब्रह्मचारी होता है। मेरे लिखने का तात्पर्य यही है कि पूर्ण ब्रह्मचारी बनने के लिए मनुष्य को वीर्य की रक्षा करना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उसके साथ ईश्वर की सही उपासना करना, ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर पूरा विश्वास रखना तथा वेदों को पढ़कर उसके अनुसार जो अपना जीवन बनाता है, वही पूर्ण ब्रह्मचारी है।

इन अर्थों में हम महर्षि दयानन्द को पूर्ण ब्रह्मचारी कह सकते हैं। जिसने अपने जीवन में कभी भी वीर्य को खण्डित नहीं किया। ईश्वर की सच्ची उपासना की और ईश्वर को सदा अपना रक्षक समझकर सदा सत्य पर आरुढ़ रहे और कभी भी असत्य से समझौता नहीं किया। वेदों के तो वे प्रकाण्ड विद्वान् थे ही और उनका पूरा जीवन वेदानुकूल तो था ही, साथ ही पूरे जीवन वेदों का ही प्रचार व प्रसार किया। इसलिए हम कह सकते हैं कि देव दयानन्द पूर्ण ब्रह्मचारी थे। वीर्य के खण्डित के विषय में महर्षि के जीवन मं एक घटना आती है कि किसी ने महर्षि से पूछा कि स्वामी जी आपको कभी भी काम वासना नहीं सताती है। तब स्वामी जी ने उत्तर दिया कि मेरे मन को हर समय कार्य में इतना अधिक व्यस्त रखता हूं कि कामवासना आने का समय ही नहीं मिलता। यदि आती भी होगी तो मन को अत्यधिक व्यस्त देखकर लौट जाती होगी। यह था महर्षि दयानन्द का चरित्र जिसको मैं हृदय से श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

पता : गोविन्दराम आर्य एण्ड ट्रस्ट सन्स, १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला), कोलकाता-७०००७

स्वास्थ्य की बात

अच्छी यह उपलब्धि है, अपना स्वस्थ शरीर।
भोजन अपना स्वच्छ हो, और स्वच्छ हो शरीर॥
और स्वच्छ हो नीर, कि सांसे शुद्ध हवा में।
इनमें ऐसी शक्ति, नहीं जो किसी दवा में॥
जब जैसा मन हुआ, वस्तु वह हमने भक्षी।
बिना विचारे काम, कहाँ की आदत अच्छी॥

ऋषि-मुनियो कोरही है, बिन्दु-बिन्दु पर शोध।
पर-पग हमको रोक कर, देते रहे प्रबोध॥
देते रहे प्रबोध, सिखाया हमको जीना।
नियमों के अनुसार, हमारा खाना-पीना॥
हमें भुलानी नहीं, तपस्या इन मुनियो की।
भारी हम पर कृपा, हमारे ऋषि-मुनियो की॥

रचयिता : रुद्रपाल गुप्त 'सरस', ग्राम छनोइया, सण्डीला हरदोई (उ.प्र.)

वर्षा ऋतुचर्या-

बारिश के मौसम में पाचन क्रिया मंद पड़ जाती है इसलिए आहार कम करना जरूरी होता है। इसीलिए इस मौसम में धार्मिक व्रत और उपवास अधिक होते है ताकि पेट पर अतिरिक्त भार न पड़े। बासी भोजन इस ऋतु में तकलीफदायक हो सकता है। त्वचा सम्बन्धी रोग भी पीड़ित कर सकते हैं।

वर्षा ऋतु में वायु के प्रकुपित होने से जठराग्नि दुर्बल हो जाती है, जिसके फलस्वरुप पाचनक्रिया विकृत हो जाती है, अतः मनुष्य का स्वास्थ्य अनियमित रहता है। बरसाती की भाषा में गरिया कहते हैं। इससे उंगलियों के मध्य में सड़न, जलन, खुजली एवं तीव्र पीड़ा होती है।

उत्पन्न रोग – अरुचि, अपचन, अजीर्ण, अतिसार, उदर, शूल, एसिडिटी, आलस्य, तन्द्रा, शारीरिक जकड़न, पीलिया, हैजा, कंजक्टिवाइटिस, मुंहासे आदि। आचार्यों का मत है कि वर्षा ऋतु में जब बादल छाए हों, शीतल वायु न चलती हो, तब घर में ही रहकर हल्का व्यायाम व कुछ यौगिक क्रियाएँ जैसे पद्मासन, वज्रासन, शवासन आदि की जा सकती है।

पथ्य : लहसुन, अदरक, कालीमिर्च, काला नमक, मूँग की छिलकायुक्त दाल, पुराना गेहूँ, चावल शहद, ताजी छाछ।

अपथ्य : दही, घना, सत्तू, गरिष्ठ भोजन, चटपटी खट्टी चीजें, करेला, बैंगन, अरबी, हरी पत्तेदार भाजी, मूली।

विहाराजन्य (अ) वर्षा ऋतु मे दिन मे सोना नुकसानदायक है, वहीं ब्रह्मचर्य का पालन स्वास्थ्यवर्धक है। (ब) शरीर को सदैव स्वच्छ व सूखा रखें। स्नान के बाद बालों में तेल जरूर लगाएँ।

उपचार :-

- कब्ज रहने पर हरड़ का चूर्ण जल से या प्रातःकाल शौच के पूर्व उष्ण जलपान।
- भोजन में अरूचि होने पर अदरक छीलकर नीबू एवं कालीमिर्च पावडर मिलाकर चूसें।
- एसिडिटी होने पर अविपत्तिकर चूर्ण भोजन के पूर्व या केला+चूने का पानी या ठंडा मीठा दूध लें।
- पेट दर्द होने पर गंधक वटी, शूलवर्जनी वटी या हिंग्वादि वटी।
- सर्दी जुकाम में त्रिकटु चूर्ण।
- त्वचा विकारों में गंधक रसायन, आमलकी रसायन, रस माणिक्य, पंचतिक्त घृत।
- पैरों में अलसक (गरिया) होने पर बारीक पावडर+देशी कपूर+नारियल के तेल का लेप करें।
- अतिसार में बिल्वादिचूर्ण, बालहरीतकी एवं कुटजारिष्ट दें।

संक्रामक रोगों में उबला पानी छानकर दें। रोगों की जानकारी एवं कारणों को दूर करना ही चिकित्सा के अंतर्गत आता है।

- डॉ. जगदीश पंचोली, पंचकर्म विशेषज्ञ -

बलि प्रथा वेद विरुद्ध है

देवी-देवता के सामने जीव हत्या करने (बलि चढ़ाने) से देवी-देवता प्रसन्न होते हैं यह मान्यता ईश्वर तथा वेद आदि शास्त्रों के विरुद्ध है। यह स्वार्थी, मांसाहारी, धर्म-ज्ञान से रहित लोगों द्वारा चलायी गयी गलत परम्परा है। इससे मांसाहार को बढ़ावा मिलता है। अतः जीव हत्या बंद करके इन्हें खिला-पिलाकर इनका संरक्षण करें।

जनहित में जारी : **ब्र. प्रशान्त दर्शनाचार्य,**
दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ साबरकांठा, गुजरात

उपादेयात्मक

अग्निहोत्र - एक देव यज्ञ

- कृपालसिंह वर्मा

देव प्रकृति की दिव्य शक्तियों को कहता है, जिनके विज्ञान-स्वरुप को जानकर, हम इनका उपयोग जीवन को सुखी बनाने के लिए कर सकते हैं। अग्निहोत्र एक देव यज्ञ है जो प्रतिदिन किया जाता है। इसके तीन लाभ है :

(१) ऋचाओं में निहित देवता के विज्ञान को जानकर उससे उपकार लेना। महर्षि दयानन्द ने स्वस्ति वाचन तथा शान्तिकरण में अनेक देवताओं की ऋचाएं दी है, जिनमें सम्बन्धित देवता का विज्ञान निहित है।

(२) घृतादि सुगन्धित तथा औषधीय पदार्थों की अग्नि में आहुति देकर वातावरण को शुद्ध करना।

(३) आहुति में प्रयुक्त पदार्थ सूक्ष्म होकर आदित्य लोक को प्राप्त होते हैं, जिनसे वर्षा होती है।

कुछ विद्वानों का मत है कि आहुति लौ रहित प्रदीप्त अग्नि में देनी चाहिए। ऐसा करने से आहुति द्रव्य वाष्प-धूप रुप में बदल जाता है। पदार्थ का विघटन होकर कार्बनडाईआक्साईड आदि गैस उत्पन्न नहीं होती। कम सामग्री से वातावरण सुगंधित हो जाता है।

अग्निहोत्र एक देवयज्ञ है। आहुति देवता को प्रबल करने के लिए दी जाती है तीव्र अग्नि ही आहुति को सूक्ष्म कर आदित्य लोग तक पहुंचाने में समर्थ होती है जो वर्षा का कारण बनती है। बड़े अग्निहोत्रों में जहां अत्यन्त लौयुक्त प्रज्वलित अग्नि में सामग्री डाली जाती है, वहां किसी प्रकार की कोई कार्बनडाईआक्साईड टाईप गैस इतनी मात्रा में उत्पन्न नहीं होती कि किसी को नाममात्र भी परेशानी हुई हो, बल्कि दूर दूर तक सुगन्ध फैल जाती है। इसलिए परम्परागत अग्निहोत्र में कोई दोष नजर नहीं आता। क्योंकि अग्नि की पचंडात तथा सामग्री की मात्रा एक उचित अनुपात में होती है। अग्निहोत्र के अतिरिक्त अनेक प्रकार के देव यज्ञ ब्राह्मण ग्रन्थों में पाये जाते हैं। जैसे -

(१) सोम यज्ञ (२) अग्निष्टोम यज्ञ (३) ज्योतिष्टोम यज्ञ आदि।

प्रत्येक देव यज्ञ के तीन प्रमुख भाग होते हैं :-

(१) देवता सम्बन्धित ऋचाओं का शंसन करना अर्थात उनके स्वरुप को साक्षात करना जिससे उस देवता का उपयोग जीवन को सफल बनाने में किया जा सके।

(२) देवता की वेदी का निर्माण करना।

(३) देवता की आहुति का निर्माण करना।

वेद में इन्द्र अर्थात् विद्युत देवता की सबसे अधिक ऋचाएं है। इन्द्र ऐश्वर्य का देवता है। ऋग्वेद की प्रथम ऋचा अग्नि देवता का वर्णन करती है। देवता का उपयोग बिना वेदी की नहीं किया जा सकता। प्रत्येक देवका के उपयोग के आधार पर अनेक प्रकार की वेदियां हो सकती है। जैसे अग्नि देवता के लिए चूल्हा रुपी वेदी भोजन बनाने के लिए बनायी जाती है, जिसमें ईंधन की आहुति दी जाती है।

गाड़ी चलाने के लिए इंजन रुपी वेदी बनायी जाती है, जिसमें पेट्रोल की आहुति दी जाती है।

हमारे देश में विश्वकर्मा नाम के एक बहुत बड़े देव यज्ञ के ज्ञाता हुए हैं जो एरोनिकल इंजीनियरिंग तथा सिविर इंजीनियरिंग में बहुत बड़े विद्वान् थे। जिसने पुष्पक विमान जैसे अत्यन्त विकसित विशालकाय विमान का निर्माण किया जो मान्त्रिक युक्ति से संचालित होता था, जिसने लंका जैसे अद्भुत नगर को बनाया। इसी प्रकार एक महर्षि भारद्वाज थे, जिन्होने यन्त्र सर्वस्व नामक पुस्तक का निर्माण किया, जिसका वैमानिक प्रकरण आज भी उपलब्ध है तथा जिनकी लिखी पुस्तक अंशुबौधिनि आज भी उपलब्ध है, जिसमें ब्राह्माण्ड की उत्पत्ति का निर्भान्त वर्णन उपलब्ध है। इन पुस्तकों में अनेक आर्य वैज्ञानिकों तथा उनकी पुस्तकों के सन्दर्भ दिये हैं। ऐतरेय, ब्राह्मणा, शतपथ ब्राह्मणा, वैशेषिक दर्शन तथा वेद, शिल्प विज्ञान से ओतप्रोत है। महर्षि दयानन्द शिल्प विज्ञान के प्रबल पक्षधर थे।

पता : डी-575, गोविन्द पुरम्, गाजियाबाद (उ.प्र.)

वेदों का पथ हम अपनायें

नव युग का आह्वान हो रहा, समरस हो धरती की गरिमा,
फैले सद्विचार बसुधा पर, उन्नत हो मनुजत्व सुमहिमा,
वैदिक धर्म पुनः जागृत हो, वेदों का पथ हम अपनाएँ,
नित्य निरन्तर घर-घर में हम वेद पढ़ें, सर्वत्र पढ़ाएँ ।

0-0

शान्ति समन्वित, समृद्ध हो जग, सुख की हो नववृष्टि धरा पर,
खिलें धवल सी दिव्य रश्मियाँ स्वर्गिक सी नूतन बसुधा पर,
मिटे तिमिर फैला जो भू पर सदियों से अज्ञानों का,
निकले नूतन सूर्य चमकता ज्ञानों का, विज्ञानों का ।

0-0

ऋषि-मुनियों के पावन पथ पर, पुनः चलें हम-जगत चलायें,
जन-जन में विस्तृत दानवता के कुतत्व को दूर भगाएँ,
आर्य बनें सब, धरती के जन, वेद ज्ञान का अनुपालन हो,
नयी किरण निकले ऊषा की, नवजीवन का संचारण हो ।

0-0

छात्र शक्ति हो शक्ति सुपूरित, रक्षा सतत् समाज करे,
निर्बल वर्गों का निर्भय हो, क्लेश कुटिलतम आज हरे,
ब्रह्म शक्ति हो विद्यामण्डित, ज्ञान सुशिक्षा करे प्रचार,
शुद्ध-प्रबुद्ध को जन-जन का अन्तर तथा समस्त विचार ।

0-0

कृषि कार्य में, व्यापारों में, वैश्य हमारे रहे सुव्यस्त,
कोई भी भुखमरी-गरीबी से न रहे कभी संत्रस्त,
आज्ञा पालक शूद्र वर्ग हो सेव्य भाव से आपूरित,
राष्ट्र तथा जन जन की सेवा करे सुनिष्ठापूर्ण त्वरित ।

0-0

वर्णाश्रम का अनुयायी हो सारा दिव्य समाज हमारा ।
शान्ति-सफलता-समरसता की बरसे भू पर अमृत धारा ।।

- स्व. राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर (उ.प्र.)

कविता

बल देना, बुद्धि देना, जीवन संसार देना
हे ओ३म् सबके स्वामी, मुझे अपना प्यार देना
बल देना, बुद्धि देना ....

सूर्य चन्द्र ये तारे, करते यही इशारे
मालिक मेरा वही है, जिसके हैं ये पसारे
मेरी याचना यही है, जीवन सुधार देना
बल देना, बुद्धि देना.........

नदियां, पहाड़, जंगल करामात है तुम्हारी
दिन रात की है गाड़ी, लाखों चढ़े सवारी
मंजिल से पहले ही ना, मुझको उतार देना
बल देना, बुद्धि देना..........

है अनन्त तेरी महिमा, ऋषियों ने ये बताया
चरणों में सिर झुकाकर, तेरे गुणों को गाया
मेरी प्रार्थना यही है, भक्ति का दान देना
बल देना, बुद्धि देना ....

केवल तेरे सहारे, जीव-जन्तु है ये सारे
गुणगान गा रहे हैं, दिन-रात ये तुम्हारे
प्रभु भव से पार करना, मुक्ति का धाम देना
बल देना, बुद्धि देना ....

गीतकार : श्री केवल
प्रस्तुतकर्ता : विनोदबिहारी सक्सेना
आर्यसमाज मठपारा, दुर्ग

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है अतः शरीर को स्वस्थ रखो ।

बलिदान

अमर शहीद-चन्द्रशेखर आजाद

\- लोचन शास्त्री

जयन्ती २३ जुलाई

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा॥

भारत माँ को विदेशी सरकार की दासता की जंजीरों से मुक्त करने के लिए तथा देश में शोषण और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए हमारे राष्ट्र के अनेक क्रान्तिकारियों ने एक लम्बे समय तक सशस्त्र क्रान्तिकारी आंदोलन चलाया था। वे अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध अपना सर्वस्व न्योछावर कर जंगे- आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे और इन तमाम संघर्षों का उद्देश्य था - देश की आजादी। ये नौजवान अपने उद्देश्यों के प्रति इतने सजग और समर्पित थे कि किसी सरकार की यातना भी उन्हें अपने ध्येय से विचलित न कर सकी। वे फाँसी के तख्ते पर चढ़ गए, गोलियों के शिकार हुए तथा दीर्घकाल तक जेलों में नारकीय यातनाएँ सहते रहे, तथापि टूटे नहीं, झुके नहीं। सर पर कफन बांधे बड़ी बहादुरी से ये लड़े और देश के लिए शहीद हो गए। देश की खातिर पहले कौन शहीद हो, वे इस बात के लिए अवश्य लड़ते थे। हर मुसीबत में अपने क्रान्तिकारी साथियों को बचाते हुए आगे बढ़कर मौत को ललकारने वाले इन क्रान्तिकारी शहीदों में एक लोकप्रिय नाम है - आत्मयाजी चन्द्रशेखर आजाद।

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म **२३ जुलाई १९०६** तद्नुसार सावन सुदी दूज दिन सोमवार को मध्यप्रदेश में अलीराजपुर रियासत के भावरा ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम पं. सीताराम तिवारी और माता का नाम श्रीमती जगरानी देवी था। आजाद का जन्म घोर विपन्नता के बीच हुआ था। आजाद के पितामह मूलतः कानपुर के निवासी थे। चपन से ही पढ़ने-लिखने के बजाय तीर-कमान या बन्दूक चलाने में आजाद की अत्याधिक रुचि थी। आजाद विद्या के केन्द्र काशी में पहुंच गये। वहां काशी विद्यापीठ में भर्ती हो गए और संस्कृत का अध्ययन करने लगे। वहां रह कर 'लघुकौमुदी' और 'अमर कोष' रट लिए। पढ़ाई के अतिरिक्त उनमें राष्ट्रीय प्रेम भी जागृत होने लगा। आजाद पढ़ाई की अपेक्षा क्रान्तिकारी साहित्य और क्रान्तिकारी संगठन में सम्मिलित होने के लिए अधिक प्रयत्नशील रहा करते थे। वास्तव में वे सोचते रहते थे - 'कोड़े खाकर अथवा महात्मा गांधी जी की जय बोलकर देश आजाद हो सकता है ? आजाद ने अब क्रान्ति पर कुछ सोचना समझना और पढ़ना आरम्भ कर दिया। उनकी भावना और विचारों में एक नया मोड़ आया कि क्रान्ति द्वारा ही देश स्वतन्त्र हो सकता है। उनके हृदय में तो देश के बन्धन काटने के लिए कुछ कर दिखाने की ज्वाला धधक रही थी, वे स्कूल की सीमा में अपने को कैसे कैद कर लेते? वे पढ़ाई छोड़कर सशस्त्र क्रान्ति का आयोजन करने वाले किसी गुप्त क्रान्तिकारी संघ की खोज करने लगे। वे आगे चलकर भारतीय प्रजातन्त्र संघ के सदस्य और सेनापति बने।

इन्हीं दिनों महात्मा गांधी का असहयोग आन्दोलन चला और इसका प्रभाव बनारस विद्यापीठ में पढ़ रहे छात्रों पर भी पड़ा। छात्रों ने जुलूस निकाला। झण्डा आजाद के हाथ में था। इसका परिणाम यह हुआ कि वे गिरफ्तार कर लिए गए और मजिस्ट्रेट ने १५ वर्षीय आजाद से पूछा - ''तुम्हारा नाम''? - ''आजाद''। ''पिता का नाम'' ? - ''स्वाधीनता''। ''घर'' ? - ''जेल''।

चन्द्रशेखर आजाद ने बेंत खाकर यह बता दिया कि देश की आजादी के लिए युवक बड़ी से बड़ी दारुण यातना भी हंसते-हंसते झेल सकते हैं। मजिस्ट्रेट के आदेशानुसार जब जेल में आजाद की पीठ पर बेंत मारे गये थे तब उनके पीठ की खाल तक उड़ गई थी और पीठ का मांस दीखने लगा था। इतने पर भी आजाद के माथे पर जरा भी शिकन नहीं पड़ी थी। कोड़े के प्रत्येक प्रहार पर वे 'वंदेमातरम्', 'महात्मा गाधी की जय' - 'भारत माता की जय' का उद्घोष करते रहे। उनके इस पराक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा घर-घर में होने लगी। लोग उन्हें श्रद्धा तथा आदर के भाव से देखते थे और उनके दर्शनों के लिए लालायित रहते थे। सम्पूर्णानन्द द्वारा सम्पादित 'मर्यादा' पत्रिका में 'वीर बालक आजाद' के नाम से लेख प्रकाशित हुआ। इसी समय से उनका नाम 'आजाद' पड़ गया। आजाद उस समय निर्भीकता और उत्साह के साथ कहा करते थे- **''मैं जीवन के अंतिम सांस तक अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ता रहूंगा।''** उनका लोकप्रिय नारा था- **दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे। आजाद ही रहे हम आजाद ही रहेंगे॥**

राष्ट्र धर्म का दीवाना : बालगंगाधर तिलक

जयन्ती २३ जुलाई

प्रेरणास्रोत – आचार्य भगवानदेव चैतन्य

यूँ तो भारत वर्ष के इतिहास में अनेकों महापुरूषों ने जन्मलिया है मगर उनमें से कुछ एक समाज की समूची धारा को ही बदलने की प्रतिभा और साहस रखते थे । बालगंगाधर तिलक जी ऐसे ही अद्‌भुत महापुरुषों में से एक थे । इनका **जन्म २३ जुलाई १८५६** को महाराष्ट्र के रत्नागिरि नामक स्थान के छोटे से गांव चिखलगांव में हुआ। इनके पिता गंगाधर रामचन्द्र तिलक साधारण से शिक्षक थे मगर वे संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। बचपन से ही पिता के संस्कारों का प्रभाव तिलक जी पर भी पड़ा। ये अपने जीवन से ही अद्‌भुत प्रतिभा के मालिक थे। ये अत्यधिक निडर तथा साहसिक प्रवृत्ति के थे। अन्याय और अत्याचार इन्हें बिल्कुल भी सहन नहीं होता था। यही कारण है कि एक बार जब इनके अध्यापक ने इन्हें अकारण दण्ड दिया तो इन्होने उसका प्रतिरोध करते हुए कहा - **"जब मैंने अपराध ही नहीं किया तो मैं क्यों दण्ड पाऊँ।"** तिलक की इस निर्भीकता को देखकर अध्यापक न केवल दंग रह गया था बल्कि उन्हें इस बात का भी अहसास हो गया था कि वह बालक आगे चलकर अवश्य कोई महान कार्य करेगा। अपने दादा से जब ये नाना साहब, तात्या टोपे तथा महारानी झांसी आदि क्रांतिवीरों की गाथाएँ सुनते थे तो ये बहुत उत्तेजित हो जाया करते थे। मात्र चौदह वर्ष की आयु में ही आपका विवाह सत्याभामा जी के साथ कर दिया गया था। उन्होने १८७६ में बी.ए. तथा सन् १८७९ में एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। कानून स्नातक होने के बाद इन्होने अपनी प्रतिभा के चमत्कार दिखाना आरंभ किए। इन्होने पूना के न्यू इंगलिश स्कूल, डक्कन एजूकेशन सोसायटी तथा फर्ग्यूसन कालेज की व्यवस्था अपने हाथों में लेकर शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किया। आगे चलकर इन्होने ही कांग्रेस में कुछ जुझारूपन पैदा किया अन्यथा उनसे पूर्व स्वतंत्रता की मांग मानों एक औपचारिकता भर ही थी। उस मांग में अधिकार के स्थान पर गिड़गिड़ाहट और किसी याचक जैसी प्रवृत्ति लगती थी। इसके विपरीत उन्होने अपने पत्र 'केसरी' में लिखा - 'भारत में अंग्रेजी नौकरशाही से अनुनय विनय करके हम कुछ नहीं पा सकते। ऐसे प्रयास करते रहना तो पत्थर पर सिर टकराने के समान है।' इसलिए उन्होने साफ शब्दों में कहा - **"स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे हम लेकर रहेंगे।"** उस समय इस प्रकार की सिंह गर्जना करने वाले वे एकमात्र महापुरुष थे। उनके इस उद्‌घोष से स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में लोगों में एक नए जोश खरोश की भावना पैदा हुई। उनकी इस प्रखरता के कारण उन्हें कुछ लोगों ने एक्टीमिस्ट तक की संज्ञा दी मगर यह एक ध्रुव सत्य है कि उनके साहसिक व्यक्तित्व के कारण ही गर्म दल का उदय हुआ। बाल, लाल और पाल की तिकड़ी ने क्रांति की मशाल को प्रखरता के साथ प्रज्वलित किया। इन्हीं के सक्रिय प्रयासों से ही भारतवर्ष को स्वतंत्रता प्राप्त हो सकी। भारत के लोगों के जनमानस में स्वतंत्रता की ललक पैदा करने के लिए इन्होने 'केसरी' तथा अंगेजी 'मराठा' नामक पत्र निकाले। इनके सम्पादकीय वास्तव में ही जनमानस को उद्वेलित करने वाले होते थे। तिलक जी के इन प्रयासों से सरकार तिलमिला उठी तथा इनके विरुद्ध अशान्ति पैदा करने, कानून भंग करने और जनता को भड़काने के आरोप लगाकर इन्हें ड़ेढ़ वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया। लाल, बाल पाल की टोली उस समय क्रांति के पर्याय माने जाते थे। यदि भारत को तिलक जी का व्यक्तित्व न मिलता तो संभवतः इतनी जल्दी स्वतंत्रता का सपना साकार न हो पाता। तिलक के अनुसार स्वराज्य प्राप्ति के अधिकार की भावना उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश से मिली। महर्षि जी की इस भावना को व्यवहारिक रूप देने के लिए ये जिस समर्पण तथा प्रखरता के साथ कार्यक्षेत्र में उतरे वह अपने आप में एक मिसाल ही है। स्वराज्य को जन्मसिद्ध अधिकार घोषित करके उन्होने

नवयुवकों के रक्त में एक नया संस्कार पैदा कर दिया जो निरन्तर उग्रता धारण करता चला गया। उनके व्यक्तित्व से प्रेरित होकर कितने ही युवक भारत माता की बलिदेवी पर अपना सर्वस्व आहुत करने के लिए अग्रसर हो गए। उनके व्यक्तित्व की इस प्रखरता ने ही उन्हें भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अमर कर दिया। सन् १८९७ में तिलक जी मुम्बई विधान परिषद के सदस्य चुने गये और उन्होंने बहुत ही निडरतापूर्वक सरकार के कार्यकलापों की आलोचना की। भारतीय जनमानस को संगठित करने के लिए उन्होने महाराष्ट्र में गणेशोत्सव की परम्परा चलाई जो आज भी प्रचलित है। इसी बीच महाराष्ट्र में अकाल तथा पूना में प्लेग से पीड़ित आम जनता की उपेक्षा के भाव को देखते हुए दो युवकों ने पूना के प्लेग कमिश्नर रैड तथा एक और अंग्रेज अधिकारी की हत्या कर दी। तिलक जी का इस हत्या से हालांकि कोई सम्बन्ध नहीं था मगर अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया तथा १८ महीने का कठोर कारावास दे दिया। इसके बाद सन् १९०८ में सरकार ने उन पर राजद्रोह का मुकदमा बनाकर माण्डले जेल भेज दिया। उस समय उनकी आयु ५२ वर्ष की थी। जून १९१४ को इन्हें कालापानी से रिहा किया गया। इस दौरान ही इनकी धर्मपत्नी सत्यभामा जी का भी निधन हो गया। उस समय तिलक जी ने मार्मिक शब्दों में कहा था कि वे देश की दुर्दशा पर इतने रो चुके हैं कि अपनी जीवन संगिनी की मृत्यु पर रोने के लिए उनके पास आंसू ही नहीं बचे हैं। तिलक जी सिद्धहस्त लेखक थे। कालापानी की कारावास में इनके द्वारा लिखी गई 'गीता रहस्य' अपने आप में अद्भुत ग्रन्थ है। इसके अतिरिक्त उन्होने **'ओरियन'** और **'द आर्कटिक होम इन द वेदाज'** की भी रचना की।

व्यक्ति के कर्म ही उसकी सच्ची पहचान हुआ करती है, बाहरी वेशभूषा या शारीरिक बनावट से नहीं। सेठ गोविन्ददास जी ने जब उन्हें सर्वप्रथम देखा तो उनके साधारण व्यक्तित्व के बारे में वे लिखते हैं- गेहूंआ, रंग, न ठिगना और न ऊंचा तथा न दुबला और न मोटा शरीर, देखने में जरा भी आकर्षक नहीं। सिर पर मराठी पगड़ी, ऊपर के शरीर पर मराठी ढंग का अंगरखा और उस पर दुपट्टा। अंगरखे के नीचे धोती और पैरों में मराठी ढंग के लाल चप्पल। जिस प्रकार सूरत सीरत अनाकर्षक उसी प्रकार वेशभूषा भी इस प्रकार के साधारण व्यक्तित्व के व्यक्ति ने अपने ओजस्वी विचारों और शेरदिली के कारण जननायक के पद को सुशोभित किया। जननायक भी साधारण नहीं बल्कि विनोबा जी ने उन्हें अप्रतीम जननायक से सम्बोधित किया था। एक स्थान पर वे लिखते हैं तिलक के विषय में जब मैं कुछ कहने लगता हूँ तो मुंह से शब्द निकलना कठिन हो जाता है। गद्गद हो उठता हूँ। साधु सन्तों का नाम लेते ही मेरी जो स्थिति होती है, वही इस नाम से भी होती है। मानों उनके स्मरण में ही यह शक्ति संचित है। तिलक जातितः ब्राह्मण थे, लेकिन जो ब्राह्मण नहीं है, वे भी उनका स्मरण कर रहे हैं। तिलक महाराष्ट्र के मराठे थे लेकिन पंजाब के पंजाबी और बंगाल के बंगाली भी उन्हें पूज्य मानते हैं। हिन्दुस्तान तिलक का ब्राह्मणत्व और उनका मराठापन, सब कुछ भूल गया है। यह चमत्कार है... इसमें रहस्य है...इस रहस्य में तिलक का गुण तो है ही लेकिन हमारे पूर्वजों की कमाई का भी गुण है। जनता का एक गुण और तिलक का एक गुण, दोनों के प्रभाव से यह चमत्कार हुआ कि ब्राह्मण और महाराष्ट्रीय तिलक सारे भारत में सभी जातियों द्वारा पूजे जाते हैं ...उन्होने श्रीराम तथा महामुनि वशिष्ठ, शिवाजी आदि के साथ उनकी तुलना करते हुए कहा है कि अपने महान कृत्यों के कारण व्यक्ति अपने नाम को ऐसी सार्थकता प्रदान करता है कि दूसरों के लिए वह नाम प्रेरणा स्रोत बन जाता है। उनकी आस्था है कि सैकड़ों वर्षों के बाद भी तिलक का नाम ही पवित्र माना जाएगा...इतिहास के आकाश में उनका नाम तारे के समान चमकता रहेगा। राष्ट्र-धर्म व देश प्रेम के दिवाने माँ भारती के यशस्वी पुत्र लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की जयन्ती के पुण्य अवसर पर उनके श्रीचरणों में विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित है। आज आवश्यकता है तिलक की तरह मातृभूमि के प्रति अटूट निष्ठा की जिससे हम फिर से इस देश के नवनिर्माण में कुछ योगदान कर सके।

पता - ८१/एस-४, सुन्दरनगर, कालोनी, जिला-मंडी, हिमाचल प्रदेश

हमें स्वामी दयानन्द का श्रद्धापूर्वक स्मरण करना चाहिए।

सुरता कार्यक्रम : दि. २६ जून २०१५ के अवसर पर

दानवीर तुलाराम जी परगनिहा के प्राकट्य दिवस पर पुण्य स्मरण

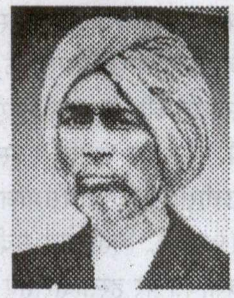

दानवीर श्री तुलाराम परगनिहा द्वारा दिनांक 26-6-1926 को स्त्री शिक्षा, संस्कृत तथा वैदिक शिक्षा के प्रसारण हेतु छत्तीसगढ़ में आर्यसमाज की स्थापना करते हुए उसे अपना सर्वस्व दान कर दिया था।

आज दानवीर के रुप में आदरणीय श्री तुलाराम जी परगनिहा का प्राकट्य दिवस है। छत्तीसगढ़ को उनके द्वारा प्रदत्त इस अवदान के उपलक्ष्य में उनके पुण्य स्मरण हेतु आज दिनांक 26-6-2015 को अपरान्ह 4.00 बजे कूर्मि भवन भिलाई में आत्मीय परिचर्चा का आयोजन किया गया है, जिसमें छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर आर्यनगर दुर्ग की ओर से मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा उपस्थित हो रहे हैं। संस्था द्वारा माननीय दानवीर श्री तुलाराम परगनिहा का स्मरण करते हुए पुष्पांजलि अर्पित करते हुये सभा गौरवान्वित अनुभव कर रही है।

इस संदर्भ में अवगत हो कि केशवराम खांडकपूर के वंश में स्वर्गीय तुलाराम जी परगनिहा आठवीं पीढ़ीं संतान थे। 1883 ई. में राय साहेब पीताम्बर सिंह पगरनिहा के परिवार में ग्राम भिंभौरी, जिला दुर्ग में इनका जन्म हुआ। अपने पिता की चार संतानों में इनका क्रम दूसरा था। परगनिहा परिवार मनवा कूर्मि के नाम से जाना जाता है। आज इनका वंश दुर्ग एवं रायपुर जिले में विस्तृत है। तुलाराम परगनिहा की प्रारम्भिक शिक्षा रायपुर में हुई। बचपन से वे मेधावी छात्र रहे। परिवार की धार्मिक पृष्ठ भूमि के कारण इन्हें आगे अध्ययन के लिये धर्म नगरी इलाहाबाद भेजा गया। जहां से इन्होने स्नातक की उपाधि प्राप्त किया और छत्तीसगढ़ का प्रथम स्नातक होने का गौरव प्राप्त किया। तुलाराम परगनिहा ने शासकीय सेवा करने का निश्चय किया। सन् 1905 में वे तहसीलदार के पद पर सागर में पदस्थ हुए। अपनी शिक्षा व शासकीय सेवा के दौरान अनेक महापुरुषों के सान्निध्य में आये और सेवाभावी संस्थाओं से निकट का संबंध बनाये रखा। इस समय हमारे देश में धार्मिक व सामाजिक सुधार आन्दोलन अपना प्रभाव स्थापित करने लगा था। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात और पंजाब में महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनैतिक शक्ति बन गया था। उसकी एक शाखा सीपी (मध्यप्रदेश) एवं बरार के नाम से नागपुर में स्थापित हो गई। दुर्ग के प्रसिद्ध मालगुजार एवं वकील घनश्यामसिंह गुप्त को इस प्रतिनिधि सभा का प्रधान नियुक्त किया गया। तुलाराम ने इन संस्थाओं के प्रमुखों से सतत् संपर्क बनाये रखा और संस्था के कार्यों से प्रभावित होते हुये स्त्री शिक्षा के लिए सर्वस्व दान कर दिये। अपनी इच्छा को मूर्तरुप प्रदान करने हेतु दिनांक 26 जून 1926 को 63 वर्ष की आयु में उन्होने सोनाखान जमीदारी के चार गांव चनाट, कसौंदी, भुसड़ीपाली, बोदापाली की कुल सम्पत्ति एवं 5500 एकड़ जमीन, ढनढनी का पूरा गांव, लवन का 25 प्रतिशत, कूरा की पूरी सम्पत्ति एवं 350 एकड़ भूमि इसके अतिरिक्त ढाबा, कुम्ही और बोरिया की 25 प्रतिशत सम्पत्ति उद्देश्य पूर्ति के लिए आर्यसमाजी संस्था को दान देकर वसीयत कर दिया। अपनी एकमात्र पुत्री गुरुदेवी के मुरहुठी गांव का सात आना जो उनके हिस्से में था, जीविकोपार्जन के लिए दे दिया। उन्होने कुल स्थावर एवं जंगम जायदाद का पूरा-पूरा मालिकाना हक श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. एवं बरार को देकर पैतृक निवास भिभौंरी की जायदाद को अपनी दोनों पत्नियों के परवरिश के लिये छोड़ दिया। इस तरह प्रथम स्नातक होने के साथ-साथ छत्तीसगढ़ में आर्यसमाज के संस्थापक बन गये। अपनी इच्छा को मूर्तरुप प्रदान करने का दायित्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं जालंधर

कन्या महाविद्यालय के संचालकों पर छोड़ दिया कि वे इस जायदाद से छत्तीसगढ़ के किसी स्थान में कोई विद्या दान की संस्था, स्त्री शिक्षा के लिए विद्यालय जालंधर कन्या विद्यालय के नमूने पर चलावें। इस प्रकार छत्तीसगढ़ के इस सपूत ने छत्तीसगढ़ में आर्यसमाज की नींव डाली। दिनांक 26 जून 1926 ई. मिती जेठ सुदी 14, संवत् 1983 के दिन उनके वसीयत पर हस्ताक्षर हुए। गवाह के रुप में उनके भाई दाऊ उदयराम परगनिहा एवं सोनपैरी वाले हेमनाथ ब्राह्मण मालगुजार के हस्ताक्षर के साथ घनश्यामसिंह गुप्ता दुर्ग ने आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हस्ताक्षर किया। यह वसीयत 3 जुलाई 1926 को विधिवत पंजीकृत हुआ। इसके कुछ समय बाद ही 25 अगस्त 1926 को तुलाराम जी परगनिहा का स्वर्गवाश हो गया। उनकी इच्छा के अनुरुप आर्य प्रतिनिधि सभा ने दुर्ग में दाऊ तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना की, जो आज कन्या महाविद्यालय के रुप में संचालित है। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा ग्राम उतई जिला दुर्ग में दानवीर तुलाराम जी परगनिहा की स्मृति में महाविद्यालय संचालित किया जा रहा है।

वर्तमान में लवन, कूरा, ढाबा एवं कुम्ही में लगभग 600 एकड़ जमीन एवं सभा बाड़ा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के आधिपत्य में कृषि कार्य संपादित करते हुए तुलाराम परगनिहा के नाम पर कन्या विद्यालय संचालित कर रही है। दिनांक 1 नवंबर 2000 को मध्यप्रदेश से अलग होकर छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण होने के पश्चात दिसंबर 2003 से विधिवत छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन किया जाकर विगत 13 वर्षों से संस्था सुचारु रुप से संचालित हो रही है। आर्यसमाज संगठन के शिरोमणी संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्कालीन सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य द्वारा प्रमाण पत्र देते हुए, छत्तीसगढ़ प्रान्त स्थित दानवीर तुलाराम परगनिहा द्वारा प्रदत्त समस्त चल-अचल सम्पत्ति एवं आर्यसमाजों के प्रबंधन का सम्पूर्ण अधिकार छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया है। दानवीर तुलाराम जी परगनिहा की स्मृति में आयोजित सुरता कार्यक्रम आयोजन पर संस्था द्वारा कोटिशः बधाई स्वीकार करें।

- संकलन : श्री दीनानाथ वर्मा

एक व्यक्ति अपने मोटापे से परेशान होकर डॉक्टर के पास जांच कराने पहुंचा -

व्यक्ति - डॉक्टर साहब मेरा मोटापा लगातार बढ़ता ही जा रहा है, कुछ उपाय बताइए।

डॉक्टर ने कहा - अगर आप आठ दिनों तक २०० किलोमीटर दौड़ें तो आपका वजन कम हो सकता है।

आठ दिन पूरे होने के बाद उस व्यक्ति ने डॉक्टर को फोन किया और कहा डॉक्टर साहब मेरा वजन कम तो हो गया है, लेकिन साथ ही एक मुश्किल पैदा हो गई है।

डॉक्टर ने पूछा - क्या हुआ ?

व्यक्ति बोला - डॉक्टर साहब, दौड़ते-दौड़ते मैं अपने घर से १६०० किलोमीटर दूर आ चुका हूँ।

एक व्यक्ति एक दुकान पर गया। वहां एक चमकीली चीज देखकर उसने दुकानदार से पूछा - यह क्या है ?

दुकानदार ने जवाब दिया - यह थर्मस है।

व्यक्ति ने उत्सुकता दर्शाते हुए पूछा- यह काम क्या करता है ?

दुकानदार ने कहा - यह गर्म को गर्म और ठंडे को ठंडा रखता है।

अगले दिन वह व्यक्ति थर्मस लेकर आफिस गया। उसके बॉस ने उसे देखा और पूछा - तुम्हारे पास यह चमकीली चीज क्या है ?

व्यक्ति ने जवाब दिया - यह थर्मस है।

बॉस ने पूछा - यह क्या काम करता है ?

व्यक्तिने कहा - यह गर्म को गर्म एवं ठडे को ठंडा रखता है।

इस पर बॉस ने पूछा - तो तुम इसमें क्या लाए हो ?

व्यक्ति बोला - मैं इसमें दो कप काफी और एक कोक लाया हूँ ।

सौजन्य : कु. समीक्षा आर्या, नन्दिनी भिलाई

कविता

... मलेरिया की शान ...

- सुभाष नारायण भालेराव "गोविन्द"

हे मलेरिया राजवंश के,
गन्दगी साम्राज्य के हे सरताज,
हे मच्छर महाराज,
रोगों के तुम कुलभूषण हो,
हो मलेरिया की शान
कुनेन की टेबलेट जो खाता,
हर बूढ़ा और नौजवान
शातिर हो या हो इन्सान
हो मलेरिया की शान
आते चुपके से तुम बैठते
कब ऐंठते मेरे अंग पर
मारते ऐसा डंक जो अपना
बाद में होत खुजान
हो मलेरिया की शान
चलते फिरते ऐसे तुम
अपना हर दम सीना तान
भौंडा राग सुनाते सबको
बेचेन होते सबके कान
हो मलेरिया की शान
खटमलों के लघुभ्राता
डॉक्टरों के भाग्य विधाता
डेन्जर रोगों के हो दाता
सबमें होती पहचान
बिना परमिट के घुस जाते हो
नर नारी में भेद न जानो
अपना रस सबको चखाते हो
सुडोल शरीर हो नाजुक तत्वों पर
बैठ-बैठ कर आधी रात
सबकी नींद भगवाते हो।
कलयुग के तुम देवता हो।
तुम ही हो भगवान
हो मलेरिया की शान।

पता - अवन्तिका ए-३८, न्यू नेहरू कालोनी,
ठाठीपुर, मुरार ग्वालियर

वैदिक गुरुकुल एवं महर्षि दयानन्द उ.मा. विद्यालय टाटीबंध रायपुर में

प्रवेश प्रारंभ

आधुनिक शिक्षा एवं प्राचीन संस्कार की समन्वित सुविधियुक्त वैदिक गुरुकुल एवं महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय में सत्र २०१५-१६ के लिए प्रवेश प्रारंभ है। अच्छी श्रेणी में पांचवी पास विद्यार्थी गुरुकुल में प्रवेश योग्य होंगे। गणित, विज्ञान, अंग्रेजी, कम्प्यूटर आदि के साथ योग, प्राणायाम, नैतिक शिक्षा, धर्म शिक्षा एवं संस्कृत, हिन्दी शिक्षा की समुचित व्यवस्था है। अभिभावकों से निवेदन है कि संतान को शिक्षित एवं उन्नत करने के लिए यथाशीघ्र गुरुकुल में प्रवेश दिलाएँ। आधुनिक शिक्षा के साथ वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञान हेतु महर्षि दयानन्द उच्च. माध्य. विद्यालय टाटीबंध, रायपुर में अच्छे परिणाम के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर, प्रयोगशाला आदि की सुव्यवस्था छात्रों की शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि करती है। संतानों को नवीन और प्राचीन ज्ञान, विज्ञान की प्राप्ति एवं संस्कारवान बनाने के लिए यथाशीघ्र प्रवेश दिलाएँ। **सम्पर्क : प्रबंधक, राजेश आर्य,** कार्यालय : महर्षि दयानन्द सेवाश्रम, टाटीबंध रायपुर (छ.ग.), मोबा. : ०८४३५८४०६५०

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से खाद्य-विषाक्ता का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

परिचय :- कई पदार्थों जो एक दूसरे के विपरीत गुणों वाले हो उनको एक साथ सेवन करने से खाद्य विषाक्ता रोग अधिक होता है। इस रोग के कारण से पेट में जहरीले तत्व जमा हो जाते हैं, जिसके कारण से रोग की अवस्था गम्भीर हो जाती है। सभी भोजन में फूड पाइजन के जहर एक समान नहीं होते हैं, इसलिए उनका असर भी एक समान नहीं होता है। सभी मनुष्य की पाचन शक्ति भी एक समान नहीं होती है, इसलिए कोई मनुष्य तो इसे पचा लेता है और किसी को इसका इंसफैक्सन अधिक होता है जिसके कारण से उसकी मृत्यु भी हो जाती है।

कारण :- जानवरों के दूध से बने पदार्थ या दूध को तांबे के बर्तन में रखने से यह जहर बन जाता है और जब ये जहरीले पदार्थ कोई सेवन करता है तो उसे फूड पाइजन हो जाता है।

अधिक खट्टे पदार्थों का एक साथ सेवन करने से भी फूड पाइजन हो सकता है। तांबे ये एल्युमिनियम के बर्तन आदि में ऐसा खाना बनाना जो इन पदार्थों से खराब हो जाते हों और फिर इनका सेवन करने से फूड पाइजन हो जाता है। कई बार बाहर के खानों में फूड पाइजन की जांच किये बगैर उस खाने को जो कोई खाता है उसे फूड पाइजन रोग हो जाता है। खाना बनाते समय कभी-कभी ऐसा होता है कि खाना पकते समय उसमें कोई जहरीले कीड़े के चले जाने से खाने में जहरीले तत्व उत्पन्न हो जाता है और इसे खाने से यह रोग हो जाता है।

लक्षण :- खाद्य विषाक्ता रोग से पीड़ित रगी को कभी-कभी तो ऐसा भी देखा जाता है कि भोजन करने के साथ ही साथ मृत्यु हो जाती है। पतले दस्त भी हो जाते है और हैजे की तरह अवस्था उत्पन्न हो जाती है और फिर रोगी की मृत्यु हो जाती है। किसी किसी रोगी में यह जहर धीरे-धीरे पैदा होकर जीवन शक्ति का अंत कर देता है। फूड पाइजन युक्त भोजन करने के कई प्रकार के रोग भी उत्पन्न हो सकते हैं - टायफाइड, टी.बी. या पेट में कीड़े होना आदि। फूड पाइजन युक्त सभी भोजन का जहर एक समान नहीं होता है किसी का प्रभाव तेज होता है तो किसी का कम। इसलिए खाद्य विषाक्ता रोग से पीड़ित किसी रोगी में कम तो किसी में अधिक लक्षण दिखाई पड़ते हैं। तांबे या पीतल के बर्तन में कोई खाने की चीज रखने पर उसमें तांबे या पीतल के विष या गुण उस पदार्थ में मिल जाते हैं और इन पदार्थों के सेवन करने से उल्टी, पतले दस्त, अकड़न आदि लक्षण रोगी में दिखाई देने लगते हैं। फूड पाइजन के कारण से पितशूल, अजीर्ण, स्नायुविक रोग, पाकाशय में जख्म आदि रोगी भी हो सकते हैं।

फूड पाइजन होने पर क्या करें और क्या न करें :- यदि रोगी में फूड पाइजन के लक्षण दिखाई देने लगे तो तुरंत ही उसके चिकित्सक के पास ले जाए और उसका इलाज करवायें। चिकित्सक के आने से पहले रोगी को बिस्तर पर आराम की स्थिति में लिटा देना चाहिए और पेय पदार्थ या सोडा वाटर पिलाना चाहिए। यदि रोगी एकदम निर्जीव की स्थिति में हो तो उसके शरीर पर गर्म सिंकाई करें तथा त्वचा और गुदाद्वार के रास्ते नमक मिले पानी की पिचकारी दें।

यदि यह पता चल जाए कि उनके पाकाशय में जहरीली चीज है तो तुरन्त ही उल्टी लाने वाली दवाईयों का प्रयोग करें ताकि उसे उल्टी आ जाए और उल्टी के साथ ही जहरीली पदार्थ बाहर हो जाएं। रोगी को ऐसे पदार्थों का सेवन करने से रोके जिससे उसे एलर्जी होती हो क्योंकि इन पदार्थों के कारण से उसे फूड पाइजन रोग हो सकता है। रोगी का यह रोग जिस विष के कारण हुआ हो उसकी प्रतिशोधक दवाईयों का सेवन रोगी को कराएं।

उपचार :- फूड पाइजन रोग से पीड़ित रोगी के रोग को ठीक करने के लिए होमियोपैथी के अनुसार कार्बो-ऐनिमेलिस, नक्स-वोमिका, पाइरोजेन, कार्बो-वेज या ऐल्यूमिना औषधि का प्रयोग लक्षणों के आधार पर चिकित्सक की सलाह से किया जा सकता है। कई रोगी ठीक हो गये हैं, कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, तलमले काम्पलेक्स, भारतमाता स्कूल के सामने, टाटीबन्ध रायपुर (छ.ग.)

समाचार प्रवाह

प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर वृन्दावन हॉल रायपुर में कार्यक्रम सम्पन्न

रायपुर। वैदिक यज्ञ योग प्रचार समिति रायपुर के तत्वावधान में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस दिनांक २१ जून २०१५ को वृन्दावन हॉल, सिविल लाइन्स रायपुर में योग संगोष्ठी, योग प्रदर्शन एवं स्मारिका विमोचन का कार्यक्रम सायंकाल ४ बजे ९ बजे तक लगभग ३०० भद्र पुरुष महिलाओं की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री दीनानाथ वर्मा, मंत्री छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। महर्षि पतञ्जलि प्रणीत योग दर्शन में अष्टांग योग का निदर्शन किया गया है, जो कि इस प्रकार है :- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। योग से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति होती है। शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए प्राणायाम से बढ़कर कोई उपाय नहीं है। शरीर के स्वस्थ रहने पर ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रुपी पुरुषार्थ- चतुष्टय को प्राप्त किया जा सकता है। प्रमुख वक्ता के रुप में मुख्य अतिथि योगाचार्य अशोकानन्द जी महाराज अन्तर्राष्ट्रीय योग प्रवक्ता एवं स्वर्ण पदक परिलब्ध द्वारा योग विषय पर विस्तृत व्याख्यान के साथ योग के सभी कठिन आसनों का भव्य प्रदर्शन किया गया, जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा दर्शकों द्वारा की गई।

डॉ. विवेक भारती योग एवं प्राकृतिक चिकित्सक आरोग्य मंदिर रायपुर द्वारा योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा विषय पर व्याख्यान दिया गया। डॉ. छगनलाल जी सोनवानी शासकीय योग शिक्षक द्वारा अपने उद्‌बोधन में यह कहा गया कि योग सबके सहयोग से सम्पन्न होता है। योग के बारिकीयों को विस्तृत रुप से श्री सोनवानी जी द्वारा व्याख्यात किया गया। **"करो योग, रहो निरोग"** नामक स्मारिका का विमोचन आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किया गया। मंच में वयोवृद्ध पीयूषपाणि वैद्य श्री गुरु गोस्वामी जी सपत्नीक विराजमान थे, जो कि प्रसिद्ध नाड़ी वैद्य एवं सिद्धहस्थ प्राकृतिक चिकित्सक हैं।

मंचस्थ विद्वान् कबीर आश्रम लहरतारा बनारस के श्री अर्जुन साहेब द्वारा निर्गुण भजन प्रस्तुत किया गया। श्री सोमप्रकाश गिरी पूर्व विधायक एवं उपप्रधान सभा को मंचस्थ कर सम्मान किया गया।

आज के व्यस्तम जिन्दगी में प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रोग से ग्रस्त व अशान्त है, जिसका समाधान केवल योग ही है। **"आसन से होता है, जीवन आसान। रोग मुक्ति का यह यौगिक ज्ञान।।"**

आयोजन में मंचस्थ विद्वानों के अलावा श्री दयाराम वर्मा प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, श्री छबिलसिंह रघुवंशी मंत्री आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, श्री अमोल सिंह सलाम पूर्व विधायक आदि लगभग ५० लोगों का शाल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मान किया गया।

इस अवसर पर सभा कार्यालय मंत्री श्री दिलीप आर्य, प्रभात आर्य आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री योगीराज साहू अध्यक्ष वैदिक योग यज्ञ प्रचार समिति रायपुर द्वारा किया गया, जो कि श्लाघनीय रहा। मंच संचालन में योगाचार्या श्रीमती भगवती चन्द्राकर एवं श्रीमती अनिता वर्मा का सहयोग सरहानीय रहा। रात्रि ८.३० बजे स्वरुचि भोज का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम भव्य रुप से सम्पन्न हुआ।

संवाददाता : दीनानाथ वर्मा, रायपुर

आर्यसमाज मठपारा दुर्ग ने मनाया अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

दुर्ग। दिनांक २१ जून २०१५ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में आर्यसमाज मठपारा दुर्ग के स्वामी श्रद्धानन्द सभा भवन में योग दिवस मनाया गया। जिसमें आचार्य लोकनाथ शास्त्री ने यौगिक क्रिया आसन व प्राणायामों को कराया। सर्वप्रथम ऋग्वेद संगठन मंत्र - संगच्छध्वं सं बदध्वं से प्रारंभ किया गया, उसके बाद विद्यालयों के विद्यार्थीगण, शिक्षक, शिक्षिकाएँ तथा आर्यसमाज शिक्षा समिति व आर्यसमाज मठपारा के अधिकारीगण सम्मिलित होकर आसन व प्राणायामों के विभिन्न अभ्यासों को पूर्ण लगन व आनन्द के साथ किए। आचार्य ने आसन व प्राणायामों के क्रियाओं को कराते हुए उनके महत्व व लाभ को भी बताया।

इस कार्यक्रम में दृढ़ संकल्पित होकर पूर्ण संकल्पना के साथ आर्य शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री हरीश बंसल ने भी स्वयं योग किया व दिशा निर्देशित करते हुए कहा कि यह आसन व प्राणायाम किसी व्यक्ति विशेष की या एक देश की नहीं, अपितु यह इस भारत भूमि के सबसे प्राचीन विद्या है, इस वतन की धरोहर है और सभी प्राणियों के हित के लिए है, महर्षि पतञ्जलि के योगासन के अनुसार इस विद्या के अभ्यास से मनुष्य का तन, मन, आत्मा व बुद्धि स्वस्थ एवं पवित्र होते हैं। उन्होंने कहा कि यदि सब मनुष्य इसका अभ्यास निरन्तर करे तो शारीरिक आत्मिक व आध्यात्मिक सुख व आनन्द का भी अनुभव कर सकता है। इस विद्या को उन्होंने बहुत ही प्राचीन विद्या बताया जिसे आज सारा विश्व स्वीकार कर रहा है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ के भात में कोई बात है, शक्ति है, ताकत है, हमारे बच्चे भात खाकर ही एके से एक कठिन से कठिन आसनों प्राणायामों को बहुत ही लगन, निष्ठा व सरलता से कर पा रहे हैं। इस अवसर पर सभी विद्यालय विद्यार्थी, शिक्षक, शिक्षिकायें व अधिकारीगण अपनी उपस्थिति देकर योगाभ्यास किया अन्त में ध्यान व **सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुखभागभवेत्॥** के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संवाददाता : संतोष शर्मा, उपमंत्री आर्यसमाज मठपारा

गुरुकुल प्रभात आश्रम में भव्य दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

मेरठ। विगत दिनों गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ में एक भव्य दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया गया। गुरुकुल के चार ब्रह्मचारी ब्र. दीपक, ब्र. अवधेश, ब्र. विकास एवं ब्र. मनीष ने पूज्यपाद गुरुवर्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज की छत्रछाया में एकादश वर्ष तक गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति में अपनी आवासीय शिक्षा पूर्ण करते हुए प्रभात आश्रम की स्नातक पदवी को अलंकृत किया। कार्यक्रम में डॉ. यशपाल सिंह-प्रधानाचार्य, किसान इण्टर कालेज, मंत्री डॉ. वाचस्पति मिश्र, मेरठ कालेज एवं आश्रमीय आचार्य एवं स्नातकण विद्यमान थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. ओमशरण गुप्त (पूर्व विभागाध्यक्ष मेरठ कालेज) ने आर्ष गुरुकुलीय वैदिक परम्परा के रहस्य को बताते हुए कहा कि वर्तमान में विश्व की सभी समस्याओं का समाधान एकमात्र गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही है। छात्र विज्ञान, गणित या अन्य किसी भी आधुनिक विषय का अध्ययन करें, किन्तु उनकी शिक्षा पद्धति ही है। छात्र विज्ञान, गणित या अन्य किसी भी आधुनिक विषय का अध्ययन करें, किन्तु उनकी शिक्षा पद्धति गुरुकुलीय ही होनी चाहिए। इससे वैश्विक, राष्ट्रिय एवं पारिवारिक सम्बन्ध सौहार्द्रपूर्ण एवं सुदृढ़ होता है।

दीक्षित ब्रह्मचारियों ने समारोह के अध्यक्ष डॉ. यशपाल जी से आश्रमीय शिक्षा के प्रति निष्ठावान् रहते हुए वैदिक संस्कृति की सुरक्षा एवं उन्नति के लिए सक्रिय सहयोग प्रदान करने का संकल्प भी ग्रहण किया। गुरुकुल के कुलाध्यक्ष पूज्य गुरुचरण स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज ने आशीर्वचन दीक्षित ब्रह्मचारियों को दिया। शान्तिपाठ के साथ दीक्षान्त समारोह का समापन हुआ।

- इन्टरनेट से संकलित

आर्यसमाज मंदिर कबीरधाम का भूमि पूजन सम्पन्न

कबीरधाम । दिनांक २५ जून २०१५ को दोप. २ बजे आर्यसमाज मंदिर कबीरधाम (कवर्धा) का भूमि पूजन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसके मुख्य अतिथि नगर पालिका अध्यक्ष कवर्धा- श्रीमती देवकुमारी चन्द्रवंशी, कार्यक्रम के अध्यक्ष - श्री दीनानाथ वर्मा मंत्री छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा दुर्ग, विशिष्ट अतिथि वार्ड पार्षद श्री विजय पाली, पार्षद श्री रामसहाय धुर्वे, श्री उमंग पाण्डेय, श्री पवन जायसवाल, सामाजिक कार्यकर्ता द्वय श्री ब्रह्मदेव गुप्ता एवं श्री कैलाश चन्द्रवंशी, श्री दयाराम वर्मा प्रधान आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर ।

कार्यक्रम संयोजक डॉ. रामअवतार आर्य अंतरंग सदस्य छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री राजकुमार वर्मा- प्रधान आर्यसमाज कवर्धा । पावन सान्निध्य योगाचार्य सौरभ शास्त्री जी पतंजलि योगपीठ हरिद्वार, श्री राममुनि वानप्रस्थी, श्री भुवनेश्वर प्रसाद शर्मा प्रबंधक आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर ।

आरंभ में पंडित सूरज आर्य पुरोहित आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर द्वारा वैदिक यज्ञ अनुष्ठान किया गया, जिसमें लगभग ३० गणमान्य नागरिक एवं पतञ्जलि योगपीठ हरिद्वार से जुड़े हुये कार्यकर्तागण उपस्थित रहे । मुख्य यजमान के रुप में श्री राजकुमार वर्मा प्रधान आर्यसमाज कवर्धा । कार्यक्रम में भाग लेने के लिए रायपुर से ७ आर्यजन, पोंड़ी से ८ आर्यजन एवं लेंजाखार से ५ आर्यजन उपस्थित रहे ।

भूमि पूजन कार्यक्रम ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के आठ मंत्रों के पाठ के साथ प्रारम्भ हुआ और मुख्य अतिथि सहित सभी विशिष्ट अतिथियों एवं उपस्थित गणमान्य नागरिकजनों के द्वारा कुदाल से भूमि खोदी गई । मुख्य अतिथि श्रीमती देवकुमार चन्द्रवंशी नगर पालिका अध्यक्ष ने अपने उद्बोधन में कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंह द्वारा ३ लाख रुपया की घोषणा की गई है, जिससे आर्यसमाज मंदिर, यज्ञ शाला, सत्संग भवन सह योगशाला के निर्माण की योजना प्रस्तावित है । उन्होंने यह भी कहा कि वार्ड पार्षद विजय पाली एवं रामसहाय धुर्वे के सहयोग से बाऊन्ड्रीवाल निर्माण आदि कार्य भी सम्पन्न किया जायेगा । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री से अनुरोध है कि वे भवन निर्माण कार्य में सहयोग करेंगे । शेष कार्य स्थानीय दानदाताओं, गणमान्य नागरिकों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के सहयोग से किया जायेगा । कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री दीनानाथ वर्मा ने कहा कि सभा द्वारा भरसक प्रयास करके भवन निर्माण में सहयोग किया जायेगा । भूमि पूजन का कार्य, शासन द्वारा लगभग आठ वर्ष पूर्व प्रदत्त ६२ डि.मी. जमीन में सम्पन्न हुआ, जो कि नाला के पार राष्ट्रीय राजमार्ग से लगा हुआ है ।

- कबीरधाम से लौटकर सभा मंत्री की रिपोर्ट

अग्निदूत ११वें वर्ष में प्रवेश

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का हिन्दी मासिक मुख पत्र 'अग्निदूत' ११वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है । सभी सुधी पाठकों को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ । - सम्पादक

संरक्षक की आवश्यकता है

गुरुकुल खेड़ा खुर्द दिल्ली-८२ में कक्षा ६ से लेकर शास्त्री तक के छात्रों को अंग्रेजी, विज्ञान, हिन्दी व गणित पढ़ाने के लिए एवं बच्चों की देखरेख करने हेतु संरक्षक की आवश्यकता है। वेतन के साथ-साथ भोजन, वस्त्र, दूध आदि की सुविधा दी जाती है । इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें।

प्राचार्य, आचार्य सुंधाशु

मोबा. : ९३५०५३८९५२, ८८००४४३८२६

आर्य समाज झक्कड़पुर में वेद प्रचार

झक्कड़पुर (जशपुर)। आर्यसमाज झक्कड़पुर वि.खं. पत्थलगांव, जिला जशपुर में गृह शान्ति के उपलक्ष्य में दिनांक १५ मई २०१५ को श्री कृतराम आर्य प्रधान एवं सभा प्रचारक श्री बीरबल आर्य के द्वारा वैदिक यज्ञ, सत्संग एवं प्रवचन सम्पन्न कराया गया।

इस अवसर पर यजमान के रुप में श्री दिलेश्वर आर्य एवं श्रीमती लक्ष्मीबाई, श्री दिनेश कुमार आर्य एवं श्रीमती यमुना बाई उपस्थित थे। कार्यक्रम में श्री अनकराम आर्य, श्रीमती सोनकुंवर आर्या, श्रीमती लक्ष्मीबाई, श्री विश्वनाथ आर्य, श्री शिवनाथ आर्य, श्री सुलोचन, श्री मनमोहन सिंह, कु. राजकुमार, कु. रामप्यारी, रामसागर, प्रेमसागर, रामानन्द सागर, शिवरतन, श्रीमती सुलोचना सहित आसपास के ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

आर्यसमाज पत्थलगांव में वैदिक यज्ञ सम्पन्न

पत्थलगांव (जशपुर)। आर्यसमाज पत्थलगांव जिला जशपुर में दिनांक ४ मई २०१५ को श्री रामकिशोर गुप्ता के निवास में पूर्णिमा के अवसर पर यज्ञ, सत्संग एवं प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर यजमान के रुप में श्री रामकिशोर गुप्ता धर्मपत्नी श्री सत्यादेवी मुख्य रुप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में श्री रवि आर्य, श्री पूर्णानन्द आर्य, श्री देवप्रकाश आर्य, श्रीमती कान्ता आर्या, श्रीमती विनीता आर्या, कु. पूजा, रवि एवं दिलीप गुप्ता सहित आसपास के ग्रामीणजन उपस्थित थे।

संवाददाता : बीरबल आर्य, सभा प्रचारक, रायगढ़

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा उ.प्र. संस्कृत अकादमी के विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित

सिरोही (राज.)। विगत दिनों आचार्या डॉ. प्रज्ञादेवी जी के प्रथम, सर्वयोग्य, प्रिय अन्तेवासिनी शिष्या, यथानाम तथागुणः पाणिनि कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या आर्यजगत् की वेद, व्याकरण, दर्शन, कर्मकाण्ड आदि शास्त्रों की परमविदुषी संस्कृत एवं हिन्दी की प्रसिद्ध सिद्धान्त लेखिका, गुरुकुल संचालिका आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा को उ.प्र. संस्कृत अकादमी ने उनकी वेद, व्याकरण, संस्कृत के प्रति की गई सेवाओं के लिए विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया है। पुरस्कार में शॉल, ताम्र सम्मान पत्र एवं ५१,०००/- की धन राशि प्रदान की गई। आचार्या जी को इस उपलब्धि पर शुभकामनायें सहित हार्दिक बधाई।

संवाददाता : अरुणा नागर, मंत्री आर्य कन्या गुरुकुल, शिवगंज, सिरोही (राज.)

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं।**

अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं।

– दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५

आर्यसमाज मठपारा दुर्ग ने मनाया योग दिवस

अग्निदेव आर्य कन्या प्राथ. शाला एवं डी.ए.वी. माध्य. विद्यालय धमतरी ने मनाया अन्तर्राष्ट्रिय योग दिवस

जुलाई 2015
डाक पंजी. छ.ग./ दुर्ग संभाग / 99 / 2015-17
CHH-HIN/2006/17407

(छपी सामग्री-प्रिन्टेड बुक)

सेवा में
श्रीमान् श्री विनय आर्य जी, उपमंत्री,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, केम्प कार्यालय,
नई दिल्ली-१

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग -491001 (छ.ग.)

भावभीनी श्रद्धांजलि

(कीर्तिर्यस्य स जीवति)

सत्यप्रकाश आर्य
(अधिवक्ता)

प्रसिद्ध अधिवक्ता एवं छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के विधिक सलाहकार आर्य नगर दुर्ग निवासी श्री सत्यप्रकाश आर्य जी का लगभग 80 वर्ष की आयु में विगत दिनांक 27-6-2015 को हृदयगति रुकने से देहावसान हो गया। दिनांक 28-6-2015 को दुर्ग स्थित हरनाबांधा मुक्तिधाम में छ.ग. सभा के नेतृत्व में अनेक आचार्यों एवं गणमान्य लोगों की उपस्थिति में विधि विधानपूर्वक उनका अन्तिम संस्कार कर दिया गया। वे परिपक्व विचारों के सुलझे हुए आर्य थे। वैदिक सिद्धान्तों के प्रति अनन्य निष्ठा थी। बड़े ही स्वाध्यायशील थे। रेलमन्त्रालय के आर्थिक मुद्दों पर प्रामाणिक एवं स्तरीय सुझाव अपने लेख के जरिये देते थे। आर्य समाज के सांगठनिक ढांचा को सुधारने उनके द्वारा काफी प्रयास किए गए। उनके असामयिक प्रयाण से छ.ग. का आर्यजगत् एक शून्य सा महसूस कर रहा है।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार का प्रभु से प्रार्थना है कि इस दुःख की घड़ी में शोक संतप्त परिवार को असह्य वेदना सहने की क्षमता प्रदान करें एवं दिवंगत आत्मा को सद्गति दे।

- सम्पादक

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।